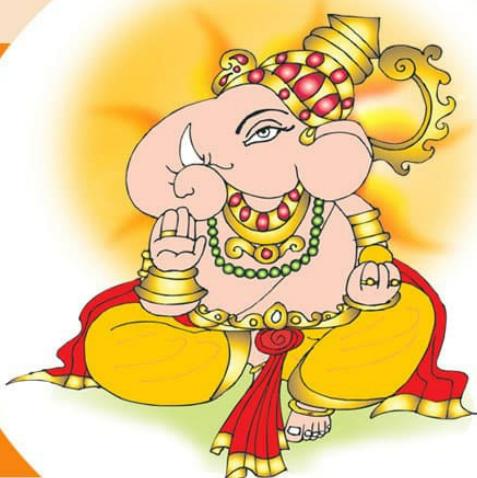


शिशु कुंडली

शिशु के सफल जीवन की समग्र व सटीक जन्म कुंडली

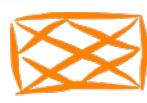


Pooja Sharma

23:8:2019

23:53:18

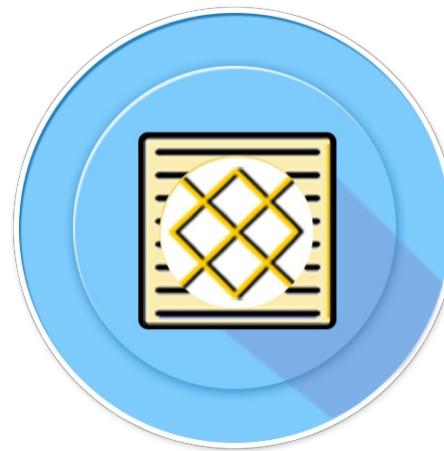
Delhi(28N40 77E13 5.5)

 **AstroSage**

World's No. 1 Astrology Portal & App



- कुंडली
- दोष
- संस्कार, मुहूर्त एवं पूजा विधि
- राजयोग
- फलादेश



भाग 1: कुंडली

■ ग्रह स्थिति, नाम सुझाव व पाया आदि

मुख्य विवरण

व्यक्ति विवरण

लिंग :	स्त्री
जन्म दिनांक :	23 : 8 : 2019
जन्म समय :	23 : 53 : 18
जन्म दिन :	शुक्रवार
इष्टकाल :	044-57-21
जन्म स्थान :	Delhi
टाइम जोन :	5.5
अक्षांश :	28 : 40 : N
रेखांश :	77 : 13 : E
स्थानीय समय संशोधन :	00 : 21 : 07
युद्ध कालिक संशोधन :	00 : 00 : 00
स्थानीय औसत समय :	23:32:10
जन्म समय - जीएमटी :	18:23:18
तिथि :	अष्टमी
हिन्दू दिन :	शुक्रवार
पक्ष :	कृष्ण
योग :	व्याघात
करण :	कोलव
सूर्योदय :	05 : 54 : 21
सूर्यास्त :	18 : 53 : 26

अवकहडा चक्र

पाया (नक्षत्र आधारित) :	लोहा
वर्ण (ज्योतिषीय) :	वैश्य
योनि :	मेष
गण :	राक्षस
वश्य :	चतुष्पद
नाड़ी :	अन्त
दशा भोग्य :	सूर्य 0 व 11 मा 9 दि
लग्न :	वृषभ
लग्न स्वामी :	शुक्र
राशि :	वृषभ
राशि स्वामी :	शुक्र
नक्षत्र-पद :	कृतिका-4
नक्षत्र स्वामी :	सूर्य
जुलियन दिन :	2458719
सूर्य राशि (हिन्दू) :	सिंह
सूर्य राशि (पाश्चात्य) :	कन्या
अयनांश :	024-07-51
अयनांश नाम :	लाहिड़ी
अक्ष से झुकाव :	023-26-12
साम्पातिक काल :	21 : 39 : 10

राशि
वृषभ

लग्न
वृषभ

नक्षत्र-पद
कृतिका-4

राशि स्वामी
शुक्र

लग्न स्वामी
शुक्र

नक्षत्र स्वामी
सूर्य

घात एवं अनुकूल बिन्दु

घात (अशुभ)

शनिवार

दिन

शकुनि

करण

वृष

लग्न

मार्गशीर्ष

माह

हस्त

नक्षत्र

4

प्रहर

कन्या

5, 10, 15

राशि

तिथि

सुकर्मन

योग

सूर्य चंद्र

ग्रह

अनुकूल बिन्दु

8

भाग्यशाली अंक

1, 3, 7, 9

शुभ अंक

5

अशुभ अंक

17, 26, 35, 44, 53

शुभ वर्ष

शुक्रवार, बुधवार

भाग्यशाली दिन

शनि, बुध, शुक्र

शुभ ग्रह

कन्या, मकर, वृषभ

मित्र राशियां

सिंह, वृश्चिक, मकर,

मीन

शुभ लग्न

चांदी

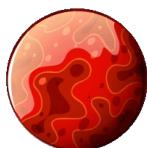
भाग्यशाली धातु

हीरा

भाग्यशाली रत्न

ग्रह स्थिति

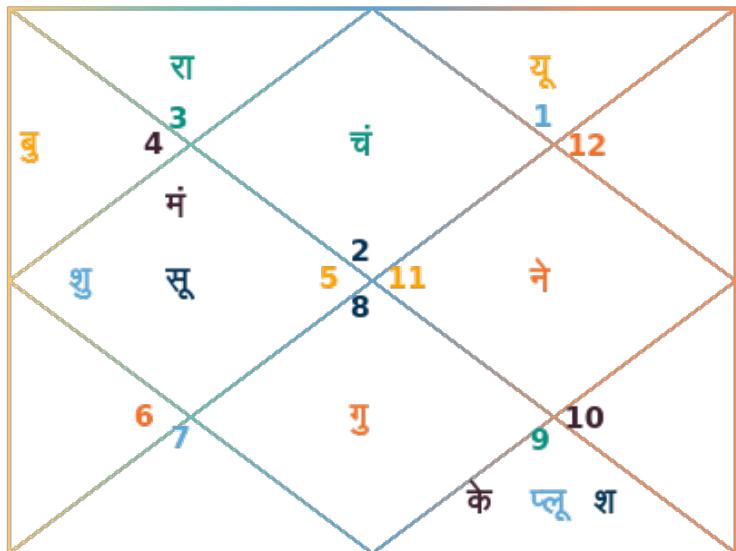
आपकी चंद्र में शनि में शुक्र की प्रत्यंतरदशा चल रही है जो कि 27 मई 2025 से 02 सितंबर 2025 तक चलेगी।

 <p>लग्न वृषभ रोहिणी</p>	 <p>सूर्य सिंह मधा</p>	 <p>चंद्र वृषभ कृतिका</p>
 <p>मंगल सिंह मधा</p>	 <p>बुध कर्क आश्लेषा</p>	 <p>गुरु वृश्चिक ज्येष्ठा</p>
 <p>शुक्र सिंह मधा</p>	 <p>शनि धनु पूर्वाषाढ़ा</p>	 <p>राहु मिथुन पुनर्वसु</p>
 <p>केतु धनु पूर्वाषाढ़ा</p>	 <p>अरुण मेष अधिनी</p>	 <p>वरुण कुंभ पूर्वभाद्रपद</p>
 <p>यम धनु उत्तराषाढ़ा</p>		

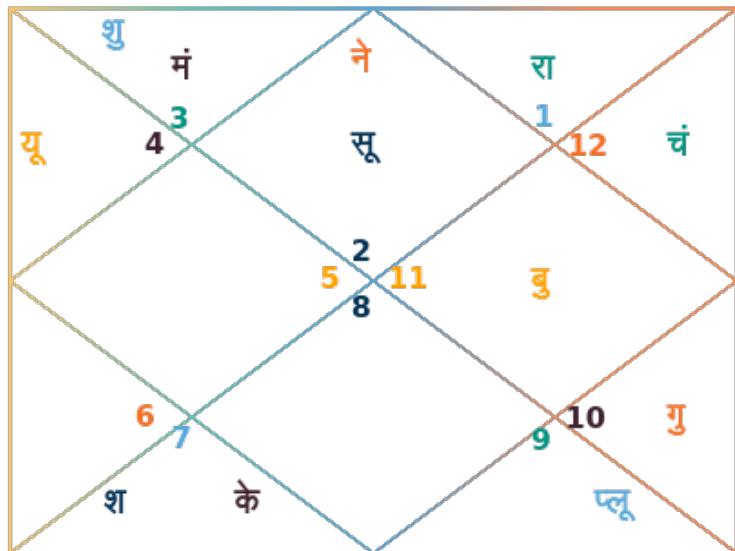
ग्रह	राशि	रेखांश	नक्षत्र	पद	व	अ	संबंध
लग्न	वृषभ	14-59-57	रोहिणी	2	--	--	--
सूर्य	सिंह	06-13-14	मधा	2	मा	--	स्व-राशि
चंद्र	वृषभ	07-54-24	कृतिका	4	मा	--	उच्च राशि
मंगल	सिंह	09-24-30	मधा	3	मा	अ	मित्र राशि
बुध	कर्क	24-57-40	आक्षेषा	3	मा	अ	शत्रु राशि
गुरु	वृश्चिक	20-38-48	ज्येष्ठा	2	मा	--	मित्र राशि
शुक्र	सिंह	08-50-36	मधा	3	मा	अ	शत्रु राशि
शनि	धनु	20-16-58	पूर्वाषाढा	3	व	--	सम-राशि
राहु	मिथुन	21-00-13	पुनर्वसु	1	व	--	--
केतु	धनु	21-00-13	पूर्वाषाढा	3	व	--	--
अरुण	मेष	12-31-30	अश्विनी	4	व	--	--
वरुण	कुंभ	23-36-13	पूर्वभाद्रपद	2	व	--	--
यम	धनु	26-43-03	उत्तराषाढा	1	व	--	--

नोट: [अ] - अस्त [मा] - मार्गी [व] -वक्री [ग] -ग्रहण

लग्र कुण्डली



नवमांश कुण्डली



विंशोत्तरी दशा

नोट:- दी गयी तारीखें दशाओं की अन्त तारीख को दर्शाती हैं।

सूर्य - 6 वर्ष

23/ 8/19 - 3/ 8/20

सूर्य : 00/00/00	चंद्र : 3/ 6/21	मंगल : 30/12/30
चंद्र : 00/00/00	मंगल : 3/ 1/22	राहु : 18/ 1/32
मंगल : 00/00/00	राहु : 3/ 7/23	गुरु : 24/12/32
राहु : 00/00/00	गुरु : 3/11/24	शनि : 3/ 2/34
गुरु : 00/00/00	शनि : 3/ 6/26	बुध : 30/ 1/35
शनि : 00/00/00	बुध : 3/11/27	केतु : 27/ 6/35
बुध : 27/ 3/19	केतु : 3/ 6/28	शुक्र : 27/ 8/36
केतु : 3/ 8/19	शुक्र : 3/ 2/30	सूर्य : 3/ 1/37
शुक्र : 3/ 8/20	सूर्य : 3/ 8/30	चंद्र : 3/ 8/37

राहु - 18 वर्ष

3/ 8/37 - 3/ 8/55

राहु : 15/ 4/40	गुरु : 21/ 9/57	शनि : 6/ 8/74
गुरु : 9/ 9/42	शनि : 3/ 4/60	बुध : 15/ 4/77
शनि : 15/ 7/45	बुध : 9/ 7/62	केतु : 24/ 5/78
बुध : 3/ 2/48	केतु : 15/ 6/63	शुक्र : 24/ 7/81
केतु : 21/ 2/49	शुक्र : 15/ 2/66	सूर्य : 6/ 7/82
शुक्र : 21/ 2/52	सूर्य : 3/12/66	चंद्र : 6/ 2/84
सूर्य : 15/ 1/53	चंद्र : 3/ 4/68	मंगल : 15/ 3/85
चंद्र : 15/ 7/54	मंगल : 9/ 3/69	राहु : 21/ 1/88
मंगल : 3/ 8/55	राहु : 3/ 8/71	गुरु : 3/ 8/90

गुरु - 16 वर्ष

3/ 8/55 - 3/ 8/71

शनि - 19 वर्ष

3/ 8/71 - 3/ 8/90

बुध - 17 वर्ष

केतु - 7 वर्ष

शुक्र - 20 वर्ष

3/ 8/90 - 3/ 8/07

3/ 8/07 - 3/ 8/14

3/ 8/14 - 3/ 8/34

बुध : 30/12/92

केतु : 30/12/07

शुक्र : 3/12/17

केतु : 27/12/93

शुक्र : 2/ 3/09

सूर्य : 3/12/18

शुक्र : 27/10/96

सूर्य : 6/ 7/09

चंद्र : 3/ 8/20

सूर्य : 3/ 9/97

चंद्र : 6/ 2/10

मंगल : 3/10/21

चंद्र : 3/ 2/99

मंगल : 3/ 7/10

राहु : 3/10/24

मंगल : 30/ 1/00

राहु : 21/ 7/11

गुरु : 3/ 6/27

राहु : 18/ 8/02

गुरु : 27/ 6/12

शनि : 3/ 8/30

गुरु : 24/11/04

शनि : 6/ 8/13

बुध : 3/ 6/33

शनि : 3/ 8/07

बुध : 3/ 8/14

केतु : 3/ 8/34

पाया

जन्म का पाया बहुत महत्व रखता है क्योंकि यह बताता है कि बालक/बालिका किस प्रकार के पाँव लेकर आपके परिवार में उत्पन्न हुआ है अर्थात् उसके जन्म के बाद आपको किस प्रकार के फल मिल सकते हैं। नक्षत्र के अनुसार पाया देखने का विचार किया जाता है। इसे इस प्रकार से समझा जा सकता है:

**आर्द्ध दश रूपाणां, विशाखा नवतामका।
रेवती षट् हेमश्च, शेषा द्वौ लौह - प्रकीर्तिता॥**

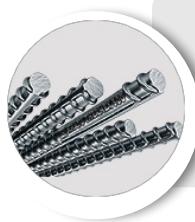
आर्द्ध, पुनर्वसु, पुष्य, आक्षेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा और अनुराधा, इन नक्षत्रों में यदि किसी बालक/बालिका का जन्म होता है तो उसे चाँदी का पाए में जन्म माना जाता है।

ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्रपद अथवा उत्तरभाद्रपद नक्षत्रों में जन्म हो तो बालक/बालिका का तांबे का पाया माना जाता है।

रेवती, अश्विनी और भरणी नक्षत्र में यदि बालक/बालिका का जन्म होता है तो सोने का पाया माना जाता है।

यदि बालक/बालिका का जन्म कृतिका, रोहिणी और मृगशिरा नक्षत्र में हो तो लोहे का पाया माना जाता है।

- चाँदी का पाया सर्वाधिक शुभ होता है।
- तांबे का पाया भी लाभदायक माना जाता है।
- सोने का पाया धन हानि करने वाला माना गया है।
- लोहे का पाया कष्टकारी माना जाता है।



बालिका का जन्म कृतिका नक्षत्र में हुआ है, जिसकी वजह से इसका पाया लोहे का होगा।

नामाक्षर / नामकरण सुझाव

जन्म कुंडली में चंद्रमा जिस नक्षत्र में स्थित होता है, उस नक्षत्र और नक्षत्र के चरण के अनुसार बालिका का नामाक्षर निकाला जाता है।

यदि चंद्रमा छठे, आठवें अथवा बारहवें भाव में हो तो बालिका का नाम सूर्य अथवा लग्न के अनुसार भी रखा जा सकता है।



आपकी राशि वृषभ और नक्षत्र कृतिका हैं। आपका जन्म नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ है। आपकी राशि के अनुसार आपके नाम का प्रथम अक्षर: ऐ

इस आधार पर ऐस्ट्रोसेज आपको निम्नलिखित नाम सुझाता है:

नोट: ये सिर्फ अनुमानित सुझाव हैं। कृपया सुनिश्चित करें कि नाम की ध्वनि ऊपर दिए हुए 'पहले अक्षर' से शुरू होती है।

नाम	अर्थ
Ekaparna	wife of himalaya
Ekachaarinee	loyal
Ekaavalee	string of pearls
Ekaakitaa	loneliness
Eni	a female black deer
Ekaakinee	loneliness
Enakshi	dear-eyed
Ekaa	alone
Enakshee	doe-eyed
Edha	prosperity
Elokeshee	woman having hair like that of a deer
Aishwaryaa	prosperity
Aishwarya	wealth
Elaa	cardamon
Aishani	goddess durga

ନାମ	ଅର୍ଥ
Ela	cardamom tree
Ekodaraa	sister
Ekinee	one who is alone
Ekavali	single-string necklace
Ekata	unity
Eshita	one who desires
Eshana	search
Eshaa	desire, wish
Esha	desire



भाग 2: दोष

■ मूल व बालारिष्ट दोष आदि

गंडमूल नक्षत्र



गंडमूल नक्षत्र

नक्षत्र विशेष का समूह गंड मूल नक्षत्र कहलाता है। यदि बालक/बालिका का जन्म बुध ग्रह के आधिपत्य वाले नक्षत्रों अर्थात् अक्षेषा, ज्येष्ठा अथवा रेवती में हुआ हो या फिर केतु के आधिपत्य वाले नक्षत्रों जैसे कि अश्विनी, मधा अथवा मूल में जन्म हुआ हो तो यह सभी नक्षत्र गंड मूल नक्षत्र कहलाते हैं और ऐसे नक्षत्रों की शांति परम आवश्यक होती है, अन्यथा यह जातक को अथवा उसके माता-पिता अथवा परिवार वालों को कष्ट देते हैं और गंड मूल के कारण बालक/बालिका को भी जीवन भर समस्याएं उठानी पड़ती हैं।

जातक परिजात के अनुसार अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न होने वाले शिशु का गण्ड दोष 16 वर्ष की आयु में, मधा नक्षत्र के प्रथम चरण के गंड दोष का प्रभाव 8 वर्ष की आयु में, ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न शिशु को 1 वर्ष तथा मधा और मूल में उत्पन्न शिशु को 4 वर्ष में तथा अक्षेषा में उत्पन्न शिशु को 2 वर्ष में और रेवती में उत्पन्न शिशु को 1 वर्ष में तथा अभुक्त मूल में उत्पन्न बालक/बालिका को गंड दोष का फल तुरंत प्राप्त होता है।



इस बालिका का जन्म कृतिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ है। अतः यह गंड मूल नक्षत्र का जन्म नहीं है। इस कुंडली में गंड मूल दोष नहीं है।

लग्न संधि

लग्न संधि से तात्पर्य है कि बालिका का जन्म लग्न प्रारंभिक एक अंश (0° से 1°) अथवा अंतिम एक अंश (29° अंश से 30°) के मध्य में हुआ हो तो लग्न संधि कहलाता है।



बालिका का जन्म लग्न संधि में नहीं हुआ है।

लग्न गण्डान्त



लग्न गण्डान्त

मीन लग्न के अन्त की आधी घड़ी, कर्क लग्न के अंत व सिंह लग्न के प्रारम्भ की आधी घड़ी, वृश्चिक लग्न के अन्त एवं धनु लग्न की आधी-आधी घड़ी, लग्न गण्डान्त कहलाती है। इसका तात्पर्य यह है कि मीन-मेष, कर्क-सिंह तथा वृश्चिक-धनु राशियों की संधियों को गण्डान्त कहा जाता है। मीन की आखिरी आधी घड़ी और मेष की प्रारंभिक आधी घड़ी, कर्क की आखिरी आधी घड़ी और सिंह की प्रारंभिक आधी घड़ी, वृश्चिक की आखिरी आधी घड़ी तथा धनु की प्रारंभिक आधी घड़ी लग्न गंडान्त कहलाती है। इन गंडान्तों में ज्येष्ठा के अंत में 5 घड़ी और मूल के आरंभ में 8 घड़ी अत्यंत अशुभ होती है।

**नातो न जीवति नरो मातुरपथ्यो भवेत् स्वकुलहन्ता ।
यदि जीवति गण्डान्ते बहुगजतुरंगो भवेद् भूपः ॥**

सारावली के अनुसार गण्डान्त में पैदा होने वाला शिशु यदि माता के लिए अशुभ है तो स्वयं उसके जीवित रहने की संभावना कम होती है लेकिन यदि वह जीवित रहता है तो वह अनेक प्रकार से धनवान होता है और प्रतापी बनता है।



बालिका का जन्म लग्न गण्डान्त में नहीं हुआ है



तिथि गन्डान्त

पंचांग के अनुसार पूर्णा तिथियों (5, 10, 15) के अंत की घड़ी, नंदा तिथियों (1, 6, 11) की शुरुआत में 2 घड़ी कुल मिलाकर 4 तिथि को गंडान्त कहा गया है। प्रतिपदा, षष्ठी व एकादशी तिथि की प्रारम्भ की एक घड़ी अर्थात् प्रारम्भिक 24 मिनट एवं पूर्णिमा, पंचमी व दशमी तिथि की अन्त की एक घड़ी, तिथि गन्डान्त कहलाता है। यदि किसी शिशु का जन्म तिथि गण्डान्त में होता है तो वह शुभ नहीं माना जाता और उसकी शांति के उपाय करने चाहिये।



इस बालिका का जन्म तिथि गण्डान्त में नहीं हुआ है।



नक्षत्र गण्डान्त

गंड मूल नक्षत्रों में शामिल रेवती और अश्विनी की संधि पर, आक्षेषा और मघा की संधि पर और ज्येष्ठा और मूल की संधि पर 4 घड़ी मिलाकर नक्षत्र गण्डान्त कहलाता है। रेवती, ज्येष्ठा व अक्षेषा नक्षत्र की अन्त की दो दो घड़ियां अर्थात् 48 मिनट की अवधि, अश्विनी, मघा व मूल नक्षत्र के प्रारम्भ की दो दो घड़ियां, नक्षत्र गण्डान्त कहलाती हैं। यदि किसी बालक का जन्म नक्षत्र गण्डान्त में हो तो उसकी शांति भी अवश्य करानी चाहिए।



इस बालिका का जन्म नक्षत्र गण्डान्त में नहीं हुआ है।

बालारिष्ट



बालारिष्ट

चंद्रमा यदि पाप ग्रहों से युक्त होकर जन्म कुंडली के छठे, आठवें या बारहवें भाव में हो तो बालारिष्ट योग बनता है, जो बालिका को शारीरिक कष्ट देता है और अरिष्ट योगों को जन्म देता है।



इस बालिका की कुंडली में चंद्रमा बालारिष्ट का निर्माण नहीं कर रहा है इसलिए यह कुंडली बालारिष्ट दोष से मुक्त है।

अशुभ परिस्थितियों में जन्म

बहुत पाराशर होराशास्त्र के अनुसार नवजात शिशु के जन्म के समय भले ही कितना ही अच्छा लग्न हो और कितने ही अच्छे ग्रह बैठे हों लेकिन कुछ योग ऐसे होते हैं, जिनमें यदि किसी शिशु का जन्म होता है तो वह अशुभ माने जाते हैं। ये योग निम्नलिखित हैं:

- शिशु का जन्म अमावस्या तिथि को हुआ हो,
- शिशु का जन्म कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को हुआ हो,
- जब शिशु का जन्म भद्रा करण में हुआ हो,
- भाई अथवा माता या पिता के जन्म नक्षत्र में शिशु का जन्म हुआ हो,
- संक्रांति के समय जन्म हुआ हो अर्थात् सूर्य राशि परिवर्तन कर रहा हो,
- सूर्य अथवा चंद्र ग्रहण के समय शिशु का जन्म हुआ हो,
- व्यतिपात के समय शिशु का जन्म हुआ हो,
- तिथि, नक्षत्र अथवा लग्न गण्डान्त में शिशु का जन्म हुआ हो,
- तिथि क्षय में शिशु का जन्म हुआ हो,
- तीन कन्याओं के बाद बालक का जन्म हुआ हो,
- तीन बालकों के बाद कन्या का जन्म हुआ हो,

विशेष उपचार

यदि उपरोक्त में से किसी भी अशुभ समय में शिशु का जन्म हुआ है तो भी घबराने की आवश्यकता बिल्कुल नहीं है क्योंकि महर्षि पाराशर ने ही इसके कुछ विशेष उपचार बताये हैं। इन उपायों के द्वारा ऐसे अशुभ समय में जन्म लेने के बाद भी संतान कष्टकारी नहीं होती। ये उपाय निम्नलिखित हैं:



अमावस्या का जन्म और उसका उपाय

अमावस्या तिथि को जन्म लेने वाला व्यक्ति सदैव गरीबी से ब्रह्मस्त रहता है, इसलिए इस तिथि को हुए जन्म के बुरे प्रभावों से राहत पाने के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिये:

- एक कलश (जल का पात्र) लें और फिर इसमें गूलर (जंगली अंजीर), वट (बरगद), पीपल, आम और नीम के ताजे पत्तों में डालें और इसे कपड़े के दो टुकड़ों से ढक दें।
- इसके बाद मंत्र जपते हुए दक्षिण-पश्चिम दिशा में इस कलश को स्थापित करें। उसके बाद अमावस्या के स्वामी देवताओं सूर्य और चंद्रमा की सोने और चाँदी को ताम्बे के साथ मिलाकर बनायी हुई मूर्तियों की पूजा करें और सूर्य तथा चंद्रमा के मंत्रों का जाप करें।
- तत्पश्चात सूर्य और चंद्रमा के मंत्रों का 108 बार जाप करते हुए इन ग्रहों की समिथि और पके हुए भोजन (चारु) के मिश्रण से हवन करें।
- इसके बाद में जो शिशु पैदा हुआ है, उसके माता-पिता पर जल छिड़कें और ब्राह्मणों को भोजन खिलाने के बाद सोना, चाँदी और एक काली गाय भेंट करें। यह आप अपनी सामर्थ्य के अनुसार कर सकते हैं।
- इन उपरोक्त उपायों को करने से जन्म लेने वाले शिशु को अमावस्या पर जन्म के बुरे प्रभावों से मुक्ति मिलती है और उसकी सुरक्षा होती है।



बालिका का जन्म अमावस्या में नहीं हुआ है।



कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी का जन्म और उसका उपाय

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को जन्म लेना भी एक बुरा संयोग माना जाता है। इसको इस प्रकार समझा जा सकता है कि यदि चतुर्दशी की अवधि को कुल 6 भागों में विभक्त करें तो पहले भाग में जन्म होने से शुभ होता है। दूसरा भाग पिता के लिये अशुभ होता है। तीसरा भाग माता के लिये अशुभ होता है। चौथा भाग मामा के लिये संकट का कारण बनता है। पांचवां भाग पूरे परिवार (कुल अथवा पीढ़ी) को कष्ट देता है। छठा भाग स्वयं के धन की हानि या कष्ट का कारण बनता है। इसलिए कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को जन्म होने के कारण उत्पन्न हुए शिशु को उपरोक्त बुरे प्रभावों से बचने के लिए शीघ्र अति शीघ्र उपाय करने आवश्यक हैं।

- इन उपायों के रूप में सर्वप्रथम भगवान शिव की सोने की मूर्ति बनवाएं जिसका वजन पूर्व में प्रचलित चाँदी के सिक्के के वजन के बराबर हो अथवा अपनी सामर्थ्य के अनुसार भी बनवा सकते हैं। उस मूर्ति के मस्तक पर चंद्रमा विराजमान होना चाहिए और भगवान शिव की गर्दन के चारों ओर सफेद रंग की माला होनी चाहिए मूर्ति को तीन नेत्रों से सजाना चाहिए जिसमें तीसरा नेत्र मस्तक के मध्य में हो, मूर्ति पर भगवान सफेद वस्त्र पहने हुए हैं तथा बैल पर बैठे हैं तथा उनके दो हाथों जिनमें एक वर मुद्रा में और दूसरा अभ्यु मुद्रा में हो।
- इसके पश्चात वरुण मंत्र के साथ आवाहन और मंत्रोच्चारण के साथ पूजा करनी चाहिए।
- फिर वरुण मंत्र के साथ आग्नेय के बाद मंत्रोच्चारण के साथ पूजा करनी चाहिए। इसके बाद उत्तर पूर्व अर्थात् ईशान कोण में एक कलश की स्थापना करनी चाहिए और कलश स्थापित करते हुए इस मंत्र से जाप करना चाहिए: इमाम मय वरुण, तम् त्वा यम, त्वां ने अग्नि आदि मंत्र का पाठ करें भद्र अग्नि सूक्त का पाठ करें और आवश्यक मंत्रोच्चारण करें।
- इसके पश्चात भगवान शिव की मूर्ति पर जल से अभिषेक करना चाहिए और उसके बाद नवग्रहों का पूजन करना चाहिए।
- इसके बाद शुद्ध धी, तिल, उड्ड, सरसों, पीपल, पाकर, पलाश और खादिर के वृक्षों की लकड़ी का उपयोग करके हवन करना चाहिए।
- नवग्रहों के लिए अलग से 108 या 28 हविश बनाए जाने चाहिए तथा विभिन्न मंत्रों के साथ नवग्रहों के निमित्त तिल से हवन करना चाहिए।
- अंत में कलश का जल जातक और उसके माता-पिता पर छिड़कना चाहिए तथा जितना आप का सामर्थ्य हो, उस के अनुसार ब्राह्मण को भोजन कराकर दक्षिणा देनी चाहिए।



बालिका का जन्म कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में नहीं हुआ है।



भद्रा काल अथवा अशुभ योगों में जन्म और उसके उपाय

यदि शिशु का जन्म भद्रा, तिथि क्षय, व्यतिपात, आदि अशुभ योगों आदि में हुआ हो तो ऐसे जन्म के अशुभ प्रभावों से बचने के लिए शिशु के माता-पिता को निम्नलिखित उपाय करने चाहिए:

उपाय

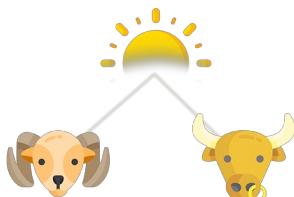
- ये सभी उपाय उस दिन करने चाहिए, जिस दिन उपरोक्त दोषों का दोबारा निर्माण हो रहा हो।
- किसी कुशल एवं योग्य ज्योतिषी की सलाह लेकर शुभ मुहूर्त, शुभ दिन और शुभ लग्न में भगवान विष्णु और अन्य देवी देवताओं की पूजा करनी चाहिए।
- भगवान शिव के मंदिर में शुद्ध धी का दीपक जलाना चाहिए।
- भगवान शिव का अभिषेक अर्थात् रुद्राभिषेक करना चाहिए।
- शिशु की दीर्घायु की कामना के साथ पीपल वृक्ष की 108 परिक्रमा लगानी चाहिए।
- इसको बाद 108 आहुति देकर हवन करना चाहिए और भगवान विष्णु के मंत्र का जाप करना चाहिए।
- अंत में अपनी सामर्थ्य अनुसार ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।
- उपरोक्त उपायों के करने से विभिन्न प्रकार के अशुभ योगों में जन्म लेने वाले शिशु को सभी बुरे प्रभावों से मुक्ति मिल सकती है और जीवन में खुशी की वृद्धि होगी।



बालिका का जन्म भद्रा काल/ व्यतिपात/ तिथिक्षय आदि अशुभ योगों में नहीं हुआ है।



संक्रांति काल में जन्म और उसके उपाय



जिस जातक का जन्म संक्रांति काल में होता है अर्थात् जब सूर्य राशि परिवर्तन करता है, उस दौरान यदि किसी जातक का जन्म होता है तो वह निर्धन तथा दुखी होता है लेकिन आवश्यक उपाय करने पर वह सुखी हो सकता है और जीवन में खुशहाली आती है। ये उपाय निम्नलिखित हैं:

उपाय

- यदि संक्रांति काल में जन्म होता है तो उसके अशुभ प्रभावों को नष्ट करने के लिए नव ग्रहों के निमित्त यज्ञ करना चाहिये।
- अपने घर के पूर्वी भाग में एक साफ़ जगह लेकर उसे गाय के गोबर से लीप कर शुद्ध करें।
- उसके बाद निम्नलिखित तीन ढेरियाँ बनाएं:
 - पाँच द्रोण धान
 - दो द्रोण चावल
 - एक द्रोण तिल
- इन तीन ढेरों पर अष्टदल कमल की आकृति बनाएं और उसे फूलों से सजाएं।
- उसके बाद किसी योग्य और ज्ञानी पंडित को चुनें जो धार्मिक क्रियाकलापों और मंत्र ज्ञान का अच्छा ज्ञाता हो।
- तत्पश्चात् तीनों ढेरियों के ऊपर एक ऐसा कलश स्थापित करें जिसमें कोई छेद ना हो।
- उसके बाद पवित्र स्थानों से लाई गई सप्तमृतिका, शतौष्ठि, पंचपल्लव और पंचगत्य उसमें डालें।
- उसके बाद कलश को कपड़े के टुकड़ों से लपेटें और कलश के ऊपर कपड़ों में लिपटे हुए मिट्टी के बर्तन रखें।
- फिर संक्रांति की मूर्ति के साथ अधिदेव और प्रत्यधिदेव की मूर्ति भी स्थापित करें। इन्हें संक्रांति की मूर्ति के दोनों और रखना चाहिए। यहां सूर्य अधिदेव हैं और चंद्रमा प्रत्यधिदेव हैं।
- इसके पश्चात दोनों मूर्तियों को वस्त्र अर्पित करें और तीनों मूर्तियों की विधिवत पंचोपचार अथवा षोडशोपचार या फिर अपनी सामर्थ्य के अनुसार पूजा करें।

- संक्रान्ति की मूर्ति की पूजा मृत्युंजय मंत्र अर्थात् त्र्यंबकम् यजामहे सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् से करें।
- सूर्य और चंद्रमा की पूजा उनके मंत्रों के साथ करें।
- संक्रान्ति की मूर्ति को स्पर्श करते हुए मृत्युंजय मंत्र का 1008 अथवा 108 या फिर 28 बार जाप अवश्य करें।
- जहां आपने कलश स्थापित किया है, उसके पश्चिम में एक छोटी सी वेदी बनाएं और उस पर दिव्य अग्नि प्रज्वलित करते हुए शुद्ध धी और तेल के चूर्ण को मिलाकर बनाई हुई सामग्री से 1008 अथवा 108 या 28 बार मृत्युंजय मंत्र से हवन करें।
- तत्पश्चात् एक बार पुनः मृत्युंजय मंत्र के जप के साथ तिलों से हवन करें।
- इस हवन को करने के उपरान्त जन्मे शिशु और उसके माता-पिता पर पवित्र जल छिड़कें।
- अंत में अपनी सामर्थ्य अनुसार ब्राह्मणों को भोजन कराएं।
- इस प्रकार उपरोक्त पूजन के द्वारा आप इन दोषों से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।



बालिका का जन्म संक्रान्ति काल में नहीं हुआ है।



सूर्य अथवा चंद्र ग्रहण का जन्म और उसके उपाय

महर्षि पराशर के अनुसार जिस शिशु का जन्म सूर्य अथवा चंद्र ग्रहण के समय होता है वह शारीरिक रूप से परेशान होता है जीवन में बीमारी संकट और गरीबी से पीड़ित भी होता है और अत्यंत विकट परिस्थितियों में मृत्यु तुल्य कष्ट प्राप्त होता है। ग्रहण काल में जन्मे शिशु के जन्म से उत्पन्न होने वाले अशुभ प्रभावों को दूर करने के लिए कुछ विशेष उपाय करने आवश्यक हैं जो कि निम्नलिखित हैं:

- अपनी सामर्थ्य के अनुसार मूर्तियों का निर्माण करें जिनमें सोने की मूर्ति उस नक्षत्र देवता की मनाए जिसमें ग्रहण घटित हुआ है।
- यदि सूर्य ग्रहण में जन्म हुआ है तो दूसरी मूर्ति सूर्य की सोने की अथवा चंद्र ग्रहण में जन्म होने पर चांदी की चंद्रमा की मूर्ति।
- उनके आगे राहु की एक मूर्ति होनी चाहिए।
- तत्पश्चात घर में किसी स्वच्छ स्थान को गाय के गोबर से लीप कर उस पर स्वच्छ वस्त्र बिछायें और तीनों मूर्तियों को स्थापित करें।
- तत्पश्चात तीनों मूर्तियों को उनकी प्रकृति के अनुसार वस्तुएँ अर्पित करें जैसे कि यदि सूर्य ग्रहण का जन्म हो तो लाल रंग में रंगे हुए चावल अर्थात लाल अक्षत, लाल रंग के फूल, लाल चंदन, लाल कपड़ा, आदि वस्तुएँ सूर्य देव की मूर्ति के समक्ष अर्पित करें। यदि जन्म चंद्रग्रहण के समय में हुआ है तो सफेद चंदन, सफेद फूल, सफेद कपड़ा और सफेद चावल चंद्र देव की मूर्ति को अर्पित करें। इसके अतिरिक्त काले रंग के कपड़े काले फूल काले तिल उड्ड आदि वस्तुएँ राहु की मूर्ति पर अर्पित करें तथा सफेद फूल उस नक्षत्र के देवता को समर्पित करें जिस नक्षत्र में जन्म के समय ग्रहण लगा है।
- इसके बाद सूर्य देव के लिए ॐ आ कृष्णो रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।। अथवा चंद्र देव के लिए ॐ इमं देवा असपतं सुवध्यं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्ये पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा।। तथा राहु के लिये ॐ क्या नश्चिन्न आ भुवदूती सदावृथः सखा। क्या शचिष्या वृता।। मंत्रों के जाप के साथ हवन करना चाहिए।
- हवन में सूर्य के लिए आक, चंद्रमा के लिए पलास तथा राहु के लिये दूर्वा और नक्षत्र देवता के लिये पीपल वृक्ष की लकड़ी प्रयोग करनी चाहिये।
- तत्पश्चात कलश का पवित्र जल जन्म लेने वाले शिशु और उसके माता-पिता पर छिड़कें।
- तदोपरांत पूजा कराने वाले ब्राह्मण को धन्यवाद दें और उचित दान दक्षिणा अपनी सामर्थ्य के

अनुसार दें तथा सभी ब्राह्मणों को भोजन कराएं।

- इस प्रकार ऊपर बताई हुई विधि से पूजन करने के कारण अशुभ समय में हुए जन्म के अशुभ प्रभावों से मुक्ति मिलती है और जातक जीवन में खुशहाली और सौभाग्य का आनंद उठाता है।



भाई, पिता अथवा माता के नक्षत्र में जन्म और उसके उपाय

बृहत् पाराशर होरा शास्त्र के अनुसार यदि किसी शिशु का जन्म अपने भाई पिता अथवा माता के जन्म नक्षत्र में होता है तो उस जन्म के कारण उसके भाई, पिता अथवा माता को अत्यंत कष्ट अथवा मृत्यु तुल्य स्थिति का सामना करना पड़ सकता है, इसलिए ऐसे जन्म के अशुभ प्रभावों को दूर करने के लिए कुछ उपाय करने चाहिए जो कि निम्नलिखित हैं:

- यह विशेष उपाय किसी विद्वान ज्योतिषी की सहायता से किसी शुभ मुहूर्त में जब चंद्रमा और बाकी ग्रह शुभ स्थितियों में हो और उस दिन रिता अथवा भद्रा दोष नहीं होना चाहिए।
- ईशान कोण में एक कलश पर शिशु के जन्म नक्षत्र की मूर्ति स्थापित करें। इसे लाल रंग के कपड़े से लपेट दें और फिर कपड़े के दो टुकड़ों से इसे पूरी तरह लपेट कर रख दें।
- इसके बाद जन्म नक्षत्र से संबंधित मंत्र का जाप करते हुए मूर्ति की पूजा करें।
- फिर जातक के गोत्र के अनुसार 108 बार नक्षत्र मंत्र का जाप करते हुए हवन करें तथा अग्नि में शुद्ध धी और अन्य हवन सामग्री अर्पित करें।
- फिर जो ब्राह्मण अथवा पुजारी पूजा करा रहा है वह शिशु के भाई अथवा पिता या माता, जिनके नक्षत्र में शिशु का जन्म हुआ है, उन पर जल छिड़कें।
- तत्पश्चात् अपनी सामर्थ्य के अनुसार ब्राह्मण और पूजा में उनके सहयोगियों को भोजन कराएं और दान दक्षिणा भेंट करें।



तीन कन्याओं के बाद बालक या तीन बालकों के बाद कन्या का जन्म और उसका उपाय

महर्षि पराशर के अनुसार यदि तीन बेटियों के बाद बेटा जन्म ले या फिर तीन बेटों के बाद एक बेटी जन्म ले तो ऐसे जन्म से माता और पिता दोनों के परिवारों को अशुभ परिणामों का सामना करना पड़ता है।

इन अशुभ प्रभावों से बचने के लिए कुछ विशेष उपाय करने आवश्यक होते हैं जो कि निम्नलिखित हैं:

- यह उपाय जिस दिन जन्म के सूतक का अंतिम दिन हो उससे अगले दिन प्रातः काल में या किसी विशेष शुभ मुहूर्त में किए जाने चाहिए।
- इन पूजा संस्कारों को संपादित कराने के लिए एक योग्य ब्राह्मण और पुजारी तथा उनके सहयोगियों का चयन करना चाहिए।
- इसके पश्चात पूजन करने वाले ब्राह्मण को नव ग्रहों को प्रणाम करते हुए धान की ढेरियों पर चार कलश स्थापित करने चाहिए।
- इसके पश्चात भगवान ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी की स्वर्ण प्रतिमाओं को इन कलशों के ऊपर स्थापित करके उनकी विधिवत पूजा करनी चाहिए।
- इसके पश्चात पूजा कराने वाले ब्राह्मण का एक सहायक स्नानादि करके शुद्ध होने के बाद चार रुद्र सूक्त और संपूर्ण शांति सूक्त का पाठ करें।
- तत्पश्चात मुख्य पुजारी को शुद्ध धी और तिल के साथ समिधा द्वारा 1008 अथवा 108 या फिर 28 बार ब्रह्मा जी, विष्णु जी, शिव जी और इंद्र देव के निर्धारित मंत्रों का पाठ करते हुए हवन करना चाहिए।
- इसके उपरांत शिशु और उसके परिवार के साथ पूर्णाहुति और अभिषेक किया जाना चाहिए।
- इस क्रिया के उपरांत पूजा कराने वाले पुजारी तथा उनके सहायकों को यथा सामर्थ्य द्रव्य दक्षिणा भेंट करनी चाहिए और भोजन कराना चाहिए।
- इसके बाद शिशु के माता और पिता को कांसे के बर्तन में रखे हुए शुद्ध धी में अपनी शक्ति अर्थात प्रतिबिंब देखने चाहिये।
- अंत में जरूरतमंद और गरीबों को कपड़े और अनाज बांटना चाहिए।
- इस प्रकार इस पूजन कर्म और समस्त विधियों को करने से शिशु के जन्म से संबंधित अशुभ दोषों का शमन हो जाता है और उसके माता-पिता शिशु के साथ खुशहाल जीवन व्यतीत करते हैं।



असामान्य प्रसव और उसका उपाय

महर्षि पराशर के अनुसार कुछ ऐसे असामान्य अथवा अशुभ प्रसव भी होते हैं, जिनमें शिशु के जन्म लेने से गांव, शहर और देश के लिए अशुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। यदि शिशु के जन्म की अनुमानित तारीख से किसी शिशु का जन्म 2, 3 अथवा 4 महीने पहले या इतने ही महीने बाद हो अथवा बिना हाथ पैर यह किसी शारीरिक अंग के या बिना सिर के या दो सिर वाले शिशु का जन्म हो या फिर किसी महिला द्वारा पशु रूपी शिशु का जन्म हो या किसी पशु द्वारा मनुष्य रूपी जीव का जन्म हो और ऐसा किसी घर में महिलाओं के प्रसव से या गौ के प्रसव से हो इस प्रकार जन्म लेने वाला शिशु परिवार के समस्त सदस्यों के लिए अशुभ होता है और अन्य लोगों के लिए भी अशुभ समाचार लेकर आने में सक्षम होता है। इसलिए इस प्रकार के जन्म के विभिन्न दोषों को दूर करने के लिए कुछ विशेष उपाय करने चाहिए जो कि निम्नलिखित हैं:

- बृहत् पाराशर होरा शास्त्र के अनुसार किसी कन्या अपनी आयु के पन्द्रहवें या सोवहवें वर्ष में गर्भेवती होना या किसी संतान को जन्म देना भी अशुभ माना जाता है।
- जब सूर्य सिंह राशि में हो तब यदि कोई गाय प्रसव करती है या जब सूर्य मकर राशि में हो तो कोई भैंस प्रसव करती है तो अपने स्वामी या देखभाल करने वाले व्यक्ति को कष्ट मिलते हैं और उन पर आपदा आती है।
- ऐसी स्थिति में उस गाय अथवा भैंस को किसी ब्राह्मण को दे देना चाहिए तथा अन्य उपाय करने चाहिये।
- इस प्रकार जब कभी भी ऐसा जन्म हो तो उचित उपायों को अपनाने से लंबी आयु, सुख और समृद्धि प्राप्त होती है।

नज़र दोष

जब किसी शिशु का जन्म होता है और उसके बाल्यकाल में अक्सर उसे लोगों की नज़र लग जाती है। ऐसा तब होता है जब बालक/बालिका की खास बात पर कोई व्यक्ति अपनी प्रतिक्रिया देता है। नज़र लगने की वजह से बच्चा अक्सर रोता रहता है, ठीक से सो नहीं पाता या दूध पीना भी बंद कर देता है, जिससे उसके स्वास्थ्य पर गलत असर पड़ता है। ऐसे में आपको नज़र दोष के उपाय करने चाहिए।



नज़र दोष के उपाय

यदि बालक/बालिका को नज़र लगती है तो आप निम्नलिखित उपाय कर सकते हैं:

- पीली कौड़ी में छेद करके उसे बच्चे को पहनाना चाहिए।
- बच्चों को मोती और अर्ध चंद्र का लॉकेट पहनाएं या काले-सफेद मोती जड़ित नज़रबंद का ब्रेसलेट पहनाएं।
- हनुमान जी के मंदिर जाकर उसके कंधों का सिंदूर बालक/बालिका के माथे पर लगाएँ।
- यदि बच्चा दूध पीने में आनाकानी कर रहा है तो उसके ऊपर से दूध को सात बार उतारा करके उस दूध को कुत्ते को पिला दें।
- यदि आपको किसी पर शक है कि बच्चे को उसी व्यक्ति की नज़र लगी है तो उसका हाथ बच्चे के ऊपर फिरवाएं।
- दो लाल सूखी मिर्च, थोड़ा सेंधा नमक, थोड़े सरसों के बीज लें। इसके बाद बच्चे के ऊपर से नीचे, आगे और पीछे तीन बार घुमाएं। अब एक गर्म तवे पर यह सब डाल दें। धुआँ उठने के बाद कुछ ही देर में बुरी नज़र उतर जाएगी।

दन्तोद्रम दोष

सदन्तजातः कुलनाशकारी द्वितीयमासादिचतुष्टयान्ते ।
दन्तोद्रवो मृत्युकरः पितुः स्यात् षष्ठे शिशोस्तत्परतः शुभंस्यात् ॥

जातक परिजात के अनुसार किसी नवजात शिशु के जन्म के समेत से ही उसके मुंह में दाँत हों तो ऐसा शिशु अपने कुल के लिए कष्टकारी माना जाता है। यदि जन्म के दूसरे महीने से चौथे महीने के अंत तक बच्चे के मुंह में दाँत आते हों तो पिता के लिए कष्टकारी माना जाता है। यदि छठे महीने में दाँत आते हों तो ऐसा शिशु स्वयं के लिए कष्टकारी होता है। छठे महीने के बाद दाँत आना शुभ माना गया है।

समय पूर्व दाँत निकलने के उपाय

यदि किसी शिशु के दाँत पाँच मास या उससे पूर्व निकल जाएं तो ऐसी स्थिति में कुछ विशेष उपाय करने चाहियें

- भगवान विष्णु की उपासना करें और ऐसे शिशु को प्रतिदिन पीले चंदन का टीका लगाएं।
- जब भी शिशु को घर से बाहर लेकर जाएं तो सर्वप्रथम कोशिश करें कि घर में बने मंदिर में शिशु को दर्शन कराके ही जाएं। यदि संभव हो तो मंदिर का फूल भी अपने साथ लेकर जाएं।
- ऐसे शिशु को पूर्णिमा के दिन पूर्ण चंद्रमा का तथा प्रतिदिन सूर्य देव का दर्शन कराएं।
- बच्चे को पूर्व दिशा में सिर करके ही शयन कराएं।
- ऐसे बच्चे को पालना या झूला झुलाने से पहले भगवान विष्णु की पूजा करें और पूर्व की ओर सिर करके ही झूला झुलाएं।
- यदि मामा के लिए कष्टकारी हो तो मामा को कटोरी डालने आना चाहिए।

सावधानियां एवं उपाय



बचाव अथवा ध्यान देने योग्य बातें

- संतान की रुचि का अवश्य ध्यान रखें और उसके अनुसार उन्हें आगे बढ़ने में मदद करें।
- संतान को सही कार्यों के लिए सदैव प्रेरित करें।
- किसी भी ऐसे खेल में संतान को अवश्य संलिप्त करवाएं, जिससे उसका शारीरिक विकास हो सके।
- यदि बालक/बालिका किसी बात पर जिद्दी हो गया है तो उसे समझाने का प्रयास करें, मारें बिल्कुल नहीं।
- बच्चों को संस्कार दें और बड़ों का आदर करना सिखाएं, जिसमें शिष्टाचार के रूप में नमस्ते करना या पैर छूना भी शामिल हो।



कुछ सामान्य उपाय

जब जीवन में कुछ समस्याएं आती हैं तो उनसे बचने के उपाय भी होते हैं। यही उपाय यहाँ आपको बताए जा रहे हैं। शिशु के जन्म से लेकर 4 वर्ष की अवस्था तक विशेष रूप से माता के कर्मों से संतान को फल मिलते हैं। इस वजह से 4 वर्ष की आयु तक माता को संतान के लिए उपाय करने चाहिए। इसके पश्चात 8 वर्ष की उम्र तक संतान के पिता द्वारा उपाय करने फलदारी साबित होते हैं।

माता द्वारा (0 - 4 वर्ष तक)

- ➡ प्रतिदिन घर में रामायण का पाठ करें और संतान को गोद में लेकर यह पाठ करना बेहतर होगा।
- ➡ बच्चे के खान पान पर विशेष रूप से ध्यान दें और जब भी वह कुछ खाया दूध पिए तो लोगों से छिपा कर रखें ताकि उनकी नजर ना लगे।
- ➡ यदि कुंडली में दिक्कत बताई गई है तो उसके उपाय माता को करने चाहिए।
- ➡ यदि आपको कोई दान बताया गया है तो वह दान संतान का हाथ लगवा कर आपको अवश्य करना चाहिए।

- नियमित रूप से हफ्ते में एक बार या दो बार संतान की नजर अवश्य उतारें।

पिता द्वारा (4 - 8 वर्ष तक)

- इस अवधि में विशेष रूप से आपके द्वारा संतान को कोई मंत्र बोलना सिखाना चाहिए।
- प्रतिदिन धार्मिक स्थल पर जाने की आदत डालें नहीं तो कम से कम हफ्ते में एक बार अवश्य जाएं और संतान को साथ लेकर जायें।
- वर्ष में एक बार कम से कम रुद्राभिषेक अवश्य करवाएं।
- वैदिक जन्म दिवस के दिन संतान की प्रगति और उत्तम स्वास्थ्य की कामना से नव ग्रह पूजन तथा जन्म दिवस पूजा अवश्य कराएं।
- प्रत्येक जन्म दिवस पर संतान के वजन के बराबर तुला दान अवश्य कराएं।
- संतान के हाथों पशु पक्षियों को भोजन अवश्य दिलवाएं।
- इसके अतिरिक्त कोई पौधा भी उनके हाथ से जरूर लगवाएं।



भाग 3: संस्कार, मुहूर्त एवं पूजा विधि

- नामकरण, मुण्डन, विद्यारंभ आदि मुहूर्त

मुण्डन मुहूर्त (केशान्त अथवा चूडाकर्म)

हिन्दू धर्म में जन्म के बाद हर शिशु के गर्भकाल के बाल उतारने की परंपरा है, इसे ही मुंडन संस्कार कहा जाता है। बालकों/बालिकाओं का मुण्डन 3, 5 और 7 आदि विषम वर्षों में किया जाता है। वहीं बालिकाओं का चौल कर्म (मुण्डन) संस्कार सम वर्षों में किया जाता है। हालांकि कुल परंपरा के अनुसार बच्चों का मुण्डन 1 वर्ष की आयु में भी किया जाता है।

मुंडन को लेकर हिन्दू धार्मिक मान्यता है कि पूर्व जन्मों के ऋणों से मुक्ति के उद्देश्य से जन्मकालीन केश काटे जाते हैं। वहीं वैज्ञानिक दृष्टि के अनुसार जब बच्चा माँ के पेट में होता है तो उसके सिर के बालों में बहुत से हानिकारक बैक्टीरिया लग जाते हैं जो जन्म के बाद धोने से भी नहीं निकल पाते हैं इसलिए बच्चे के जन्म के 1 साल के भीतर एक बार मुंडन अवश्य कराना चाहिए।



मुंडन मुहूर्त के लिए तिथि, नक्षत्र और मास विचार

- हिन्दू पंचांग के अनुसार चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ (बड़े बच्चे का मुंडन इस माह में न करें, साथ ही इस माह में जन्म लेने वाले बच्चे का मुंडन भी इस माह न करें), आषाढ़ (मुंडन आषाढ़ी एकादशी से पहले करें), माघ और फाल्गुन मास में बच्चों का मुण्डन संस्कार कराना चाहिए।
- तिथियों में द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी और त्रयोदशी मुंडन संस्कार के लिए शुभ मानी जाती हैं।
- मुंडन के लिए सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ दिन माने गये हैं। वहीं शुक्रवार के दिन बालिकाओं का मुंडन नहीं करना चाहिए।
- नक्षत्रों में अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, पुनर्वसु, चित्रा, स्वाति, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा मुंडन संस्कार के लिए शुभ माने गये हैं।
- कुछ विद्वानों के अनुसार जन्म मास व जन्म नक्षत्र और चंद्रमा के चतुर्थ, अष्टम, द्वादश और शत्रु भाव में स्थित होने पर मुंडन निषेध माना गया है। वहीं कुछ विद्वान जन्म नक्षत्र या जन्म राशि को मुंडन के लिए शुभ मानते हैं। द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, षष्ठम, सप्तम, नवम या द्वादश राशियों के लग्न या इनके नवांश में मुंडन शुभ होते हैं।
- द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, षष्ठम, सप्तम, नवम या द्वादश राशियों के लग्न या इनके नवांश में मुंडन शुभ होते हैं।



मुंडन संस्कार के लाभ

- मुण्डन के बाद बच्चों के शरीर का तापमान सामान्य हो जाता है। इससे मस्तिष्क स्थिर रहता है, साथ ही बच्चों को शारीरिक और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ नहीं होती हैं।
- मुण्डन के प्रभाव से बच्चों को दाँतों के निकलते समय होने वाला दर्द अधिक परेशान नहीं करता है।
- जन्मकालीन केश उतारे जाने के बाद सिर पर धूप पड़ने से विटामिन डी मिलता है। इससे कोशिकाओं में रक्त का प्रवाह अच्छी तरह से होता है और इसके प्रभाव से भविष्य में आने वाले बाल बेहतर होते हैं।

विशेष:

मुंडन संस्कार का शुभ मुहूर्त में संपन्न होना शिशु के लिए लाभदायक और कल्याणकारी होता है, इसलिए मुंडन संबंधी मुहूर्त के लिए विद्वान ज्योतिषी से परामर्श अवश्य लें या अपनी कुल परंपरा के अनुसार बच्चों का मुण्डन कराएँ।

आने वाले मुंडन मुहूर्त जानने के लिए यहाँ क्लिक करें - [मुंडन मुहूर्त →](#)

विद्यारंभ संस्कार मुहूर्त

हिन्दू धर्म के सोलह संस्कारों में से विद्यारंभ संस्कार को भी बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। इसी दिन से बच्चे को औपचारिक रूप से शिक्षा मिलना आरंभ हो जाता है। विद्यारंभ संस्कृत के दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसमें “विद्या” का अर्थ है ज्ञान और “आरंभ” का मतलब शुरुआत। ऐसी मान्यता है कि, जब बच्चे का शुभ मुहूर्त में विद्यारंभ संस्कार संपन्न करवाया जाता है तो इससे उसे ज्ञान, बुद्धि और अच्छे संस्कारों की प्राप्ति होती है। विद्यारंभ के बारे में संस्कृत में एक बेहद प्रचलित क्लोक इस प्रकार से है :

मंत्रः

“विद्या लुप्यते पापं विद्ययाऽयुः प्रवर्धते।
विद्या सर्वसिद्धिः स्याद्विद्ययामृतश्चुते॥”

इस संस्कार के माध्यम से एक और जहाँ बच्चे की रुचियों को ज्ञान और विद्या की ओर अग्रसर किया जाता है वहीं दूसरी ओर माता-पिता को भी इस संस्कार के जरिये अपने दायित्वों का पता चलता है। यहाँ हम आपको विद्या आरंभ संस्कार के बारे में विस्तृत रूप से बताएंगे।



विद्यारंभ संस्कार की सही आयु

बच्चों का मन विद्या और ज्ञान की तरफ बढ़े, इसके लिए हर माता-पिता को विद्यारंभ संस्कार करवाना चाहिए। ज्योतिष के अनुसार इसके लिए पांच वर्ष की अवस्था उचित मानी गई है। हालांकि वर्तमान समय के प्रतिस्पर्धी दौर में लोग अपने बच्चों को पांच वर्ष से पहले ही शिक्षा देने लगे हैं। ऐसी स्थिति में यह कहना ज्यादा उचित होगा कि आप बालक या बालिका को चाहे किसी भी अवस्था से विद्या ग्रहण करवाएं लेकिन इसकी शुरुआत विद्यारंभ संस्कार से ही करें। इससे आने वाले समय में बच्चा सही दिशा में अग्रसर होगा और अपने विवेक से सही विषयों का चुनाव कर पाएगा।



विद्यारंभ संस्कार के दौरान इन बातों का रखें ध्यान

विद्या, ज्ञान और शिक्षा का प्रतीक माँ सरस्वती और भगवान गणेश को माना जाता है इसलिए विद्यारंभ के दौरान पूजा स्थल पर इन दोनों की प्रतिमाएं या चित्र होने चाहिए। पूजन स्थल में पट्टी, दवात, लेखनी, स्लेट और खड़िया भी रखी जानी चाहिए। यदि ये सभी चीजें आवश्यक रूप से उपलब्ध ना हों तो कम से कम पेन, पेंसिल, स्लेट, चौक, आदि रख सकते हैं। गुरु पूजन के लिए यदि बच्चे के गुरु उपस्थित हों तो उनकी पूजा की जानी चाहिए नहीं तो प्रतीक रूप में नारियल की पूजा की जानी चाहिए।

उपर्युक्त तैयारियाँ करने के बाद भगवान गणेश और माँ सरस्वती का श्रद्धापूर्वक पूजन किया जाता है। इसमें सर्वप्रथम गणेश जी की पूजा की जाती है उसके बाद माँ सरस्वती की पूजा की जाती है।

गणेश पूजन तथा सरस्वती पूजन क्रिया

बच्चे के हाथ में फूल, अक्षत, रोली देकर मंत्र जाप के साथ-साथ भगवान गणेश जी की मूर्ति या चित्र के सामने अर्पित करें। बच्चे के हाथ में फूल, अक्षत, रोली देकर मंत्र जाप के साथ-साथ माँ सरस्वती की मूर्ति या चित्र के सामने अर्पित करें।

भावना पूजन के दौरान अपने मन में प्रार्थना करें कि विवेक के अधिष्ठाता गणपति बालक/बालिका पर अपनी कृपा रखें और उनके आशीर्वाद से बालक/बालिका के विवेक में निरंतर वृद्धि हो। साथ ही बालक/बालिका की बुद्धि भी प्रखर हो। पूजा के दौरान मन में प्रार्थना करें कि बालक/बालिका को ज्ञान, कला और संवेदना की देवी माँ सरस्वती का आशीर्वाद मिले और, माँ सरस्वती के आशीर्वाद से ज्ञान और कला के प्रति बालक/बालिका का रुझान हमेशा बना रहे।

मंत्रः

“गणानां त्वा गणपति हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति हवामहे ।

निधीनां त्वा निधिपति हवामहे वसो मम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥”

“ॐ गणपतये नमः। आवाहयामि, स्थापयामि ध्यायामि॥”

“ॐ पावका नः सरस्वती, वाजेभिवार्जिनीवती। यज्ञं वष्टुधियावसुः।”

“ॐ सरस्वत्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि ध्यायामि।”

भगवान गणेश और माँ सरस्वती के पूजन के बाद शिक्षा ग्रहण करने के लिए इस्तेमाल किये जाने वाले उपकरणों (दवात, कलम और पट्टी अथवा पेन, पेन्सिल, स्लेट, चॉक, आदि) का पूजन करें।

विद्या प्राप्ति में इन उपकरणों के महत्व को देखते हुए इन्हें विद्यारंभ संस्कार के दौरान वेदमंत्रों से अभिमंत्रित किया जाता है ताकि इनका शुरूआती प्रभाव मंगलकारी हो सके।

अधिष्ठात्री देवी पूजन

उपासना विज्ञान की मान्यताओं के अनुसार कलम की अधिष्ठात्री देवी 'धृति' हैं, पट्टी या स्लेट की अधिष्ठात्री देवी 'तुष्टि' हैं और दवात की अधिष्ठात्री देवी 'पुष्टि' हैं। षोडश मातृकाओं में तीनों देवियां धृति, पुष्टि और तुष्टि उन तीन भावनाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो ज्ञान और विद्या हासिल करने के लिए बहुत जरूरी और आधारभूत हैं। अतः विद्यारंभ संस्कार के दौरान कलम, दवात और पट्टी का पूजन करते समय इनसे संबंधित अधिष्ठात्री देवियों का पूजन किया जाता है।

लेखनी पूजन

विद्यारंभ संस्कार के दौरान बालक/बालिका के हाथ में कलम दी जाती है। चूँकि कलम की देवी धृति को माना जाता है, जिनका भाव 'अभिरुचि' है। विद्या प्राप्त करने वाले के मन में यदि विद्या पाने की अभिरुचि होगी तो जीवन में वो हमेशा आगे बढ़ता जाएगा। अगर ऐसा नहीं होता तो जीवन के कई क्षेत्रों में इंसान पीछे रह जाता है। अतः कलम पूजन के दौरान धृति देवी से प्रार्थना करनी चाहिए कि शिक्षार्थी की अभिरुचि निरंतर अध्ययन में बढ़ती ही जाए और वो शिक्षा के क्षेत्र में अच्छे परिणाम हासिल करे।

क्रिया

कलम पूजन के लिए बालक/बालिका के हाथ में पुष्प, अक्षत और रोली देकर पूजा स्थल पर स्थापित कलम पर मंत्र को उच्चारित करते हुए चढ़ाएं।

मंत्रः

**ॐ पुरुदस्मो विषुरूपः इन्दुः अन्तमहिमानमानंजधीरः।
एकपदीं द्विपदीं त्रिपदीं चतुष्पदीम्, अष्टापदीं भुवनानु प्रथन्ता स्वाहा।"**

भावना

पूजन के दौरान अभिभावकों को यह भावना रखनी चाहिए कि धृति शक्ति भविष्य में शिक्षार्थी की रुचि ज्ञान और विद्या में लगाए रखेगी।

दवात पूजन

कलम का इस्तेमाल बिना दवात के नहीं किया जाता। कलम स्याही या खड़िया के सहारे ही लिख पाने में समर्थ होती है। इसी वजह से कलम के बाद दवात पूजन किया जाता है। दवात की अधिष्ठात्री देवी 'पुष्टि' को माना गया है। पुष्टि का भाव एकाग्रता होता है, इंसान के अंदर यदि एकाग्रता है तो वो कठिन से कठिन विषय को भी वे आसानी से समझ सकता है। इसलिए पुष्टि देवी की आराधना करना अति आवश्यक है। इसके लिए पूजा स्थल में रखी दवात के कंठ पर कलाव बांधा जाता है और रोल, धूप, अक्षत और पुष्प से दवात का पूजन किया जाता है।

क्रिया

पूजा स्थल पर रखी दवात पर मंत्र का जाप करते हुए बालक/ बालिका के हाथों से पूजन सामग्री चढ़ाएं।

मंत्र:

“ॐ देवीस्तिसस्तिसो देवीवर्योधसं, पतिमिन्द्रमवद्यर्यन्।
जगत्या छन्दसेन्द्रिय शृण्मिन्द्रे, वयो दधदसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥”

भावना

माता-पिता को मन में यह भावना रखनी चाहिए कि पुष्टि शक्ति के सान्निध्य से बालक/बालिका में तीव्र बुद्धि का विकास हो और उनके अंदर एकाग्रता का गुण आए।

पट्टी पूजन

कलम और दवात के बाद पट्टी का पूजन किया जाता है। कलम और दवात का उपयोग तभी हो पाता है जब पट्टी या कागज उपलब्ध हों, इनकी अधिष्ठात्री देवी 'तुष्टि' हैं। तुष्टि का भाव है मेहनत और श्रमशीलता। अच्छा ज्ञान प्राप्त करने के लिए श्रम की भी आवश्यकता होती है। कई लोग ऐसे होते हैं जिनमें पढ़ने के प्रति रुचि भी होती है और मन एकाग्र भी हो जाता है लेकिन उनके अंदर सुस्ती होने के कारण वो जीवन में कुछ नहीं कर पाते इसलिए तुष्टि देवी से कामना की जाती है कि वो शिक्षार्थी को श्रमशील बनाएं।

क्रिया

पट्टी पूजन के दौरान मंत्रोच्चारण के साथ बालक/बालिका के हाथों से पूजा-स्थल पर स्थापित पट्टी पर पूजन सामग्री अर्पित कराएं।

मंत्रः

ॐ सरस्वती योन्यां गर्भमन्तरश्चिभ्यां, पतनी सुकृतं बिभर्ति।
अपारसेन वरुणो न साम्नेन्द्र, श्रिये जनयन्नप्सु राजा ॥"

भावना

अभिभावक मन में यह भावना रखें कि तुष्टि शक्ति शिक्षार्थी को श्रमशील बनाए और वह जीवन के हर मोड़ पर मेहनत कर सके।

गुरु पूजन

शिक्षा प्राप्त करने के लिए अध्यापक का होना अनिवार्य है। जैसे अंधकार में एक दिया ऊजाला कर देता है उसी प्रकार गुरु भी शिष्य में छिपे अँधेरे को ज्ञान रूपी दिए से दूर कर देता है। विद्यारंभ संस्कार के दौरान बालक/बालिका द्वारा गुरु की भी पूजा की जाती है। इससे शिक्षार्थी के मन में अपने गुरु के प्रति सम्मान में वृद्धि होती है और शिक्षक भी शिक्षार्थी को उचित ज्ञान देने के लिए प्रतिबद्ध होता है। हमारे शास्त्रों में गुरु को ब्रह्मा से भी ऊपर माना गया है क्योंकि गुरु के द्वारा ही हमें संसार का ज्ञान होता है।

क्रिया

पूजन प्रक्रिया के दौरान अगर बालक/बालिका के गुरु समक्ष न हों तो गुरु के प्रतीक स्वरूप नारियल का मंत्रोच्चारण के द्वारा पूजन करें।

मंत्रः

“ॐ बृहस्पते अति यदयोर्, अह्नद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु,
यद्वीदयच्छवसः क्रतप्रजात, तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।
उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतये, त्वैष ते योनिबृहस्पतये त्वा ॥ॐ श्री गुरवे नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि।”

भावना

बालक/बालिका में शिष्योचित गुण विकसित हों और वो अपने शिक्षक की बातों को भली भाँति समझ पाए, यह भावना मन में होनी चाहिए। इसके साथ ही यह भावना भी मन में बनी रहनी चाहिए कि शिक्षार्थी गुरु का कृपा पात्र बना रहे।

अक्षर लेखन और पूजन

पट्टी या कागज पर बालक/बालिका द्वारा 'ॐ भूर्भुवः स्वः' लिखा जाए। ऐसा भी किया जा सकता है कि खड़िया के द्वारा शिक्षक स्लेट पर ये शब्द लिख दें और उसके बाद माता पिता के हाथों की सहायता से बालक/बालिका उन शब्दों के ऊपर लिखे। या शिक्षार्थी का हाथ पकड़कर गुरु स्लेट या कागज पर 'ॐ भूर्भुवः स्वः' लिखवाए। ॐ भूर्भुवः स्वः में ॐ परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम है, भूः का अर्थ है श्रम, भुवः का अर्थ है संयम और स्वः का अर्थ है विवेक। ये सारे गुण शिक्षा प्राप्ति के लिए बहुत जरुरी हैं, इसलिए विद्यारंभ संस्कार के दौरान शिक्षार्थी द्वारा यह शब्द लिखवाए जाते हैं। यह काम अगर गुरु द्वारा करवाया जाए तो बहुत शुभ होता है।

क्रिया

अभिभावक अक्षर लेखन करवाने के बाद बालक/बालिका के हाथों से मंत्र का जाप करते हुए उनपर फूल, अक्षत चढ़वाएं।

मंत्रः

“ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च,
नमः शंकराय च मयस्कराय च, नमः शिवतराय च।”

भावना

ज्योतिषियों के अनुसार अगर ज्ञान को अभिव्यक्त न किया जा सके तो उस ज्ञान का कोई महत्व नहीं रह जाता, इसलिए अक्षर पूजन के द्वारा बालक/बालिका में अभिव्यक्ति के गुण डालने की कोशिश की जाती है। ज्ञान के प्रथम चरण में अभिभावकों को अक्षर पूजन कर बालक/बालिका के अंदर खुद को अभियुक्त करने की जिज्ञासा डालने का प्रयास किया जाता है।

विशेष आहुति

विद्यारंभ संस्कार के अंतिम चरण में हवन सामग्री में कुछ मिष्ठान मिलाकर पांच बार निम्न मंत्र के उच्चारण के साथ पांच आहुतियां बालक/बालिका से डलवाएं। मन में भावना करें कि यज्ञ से आई ऊर्जा से बालक/बालिका में अच्छे संस्कार आएं और मानसिक रूप से शिक्षार्थी बलिष्ठ हो।

मंत्रः

**“ॐ सरस्वती मनसा पेशलं, वसु नासत्याभ्यां वयति दशर्तं वपुः।
रसं परिसुता न रोहितं, नग्नहृधीरस्तसरं न वेम स्वात्मा। इदं सरस्वत्यै इदं न मम।”**

विशेष आहुति होने के बाद यज्ञ के बाकी कर्म पूरे कर लेने चाहिए और उसके बाद आशीर्वचन, विसर्जन और जयघोष किया जाना चाहिए। अंत में प्रसाद वितरण करने के बाद विद्यारंभ संस्कार का समापन किया जाना चाहिए।

विशेष टिप्पणीः

वर्तमान समय में यदि कलम और दवात उपलब्ध ना हो तो उनके स्थान पर पेन, पेसिल, स्लेट, चॉक, कॉपी, आदि का पूजन किया जा सकता है।

आने वाले विद्यारंभ मुहूर्त जानने के लिए यहाँ मिलक करें - [विद्यारंभ मुहूर्त →](#)

जनेझ (उपनयन अथवा यज्ञोपवीत) संस्कार मुहूर्त

जनेझ संस्कार, हिन्दू धर्म के 16 संस्कारों में से एक प्रमुख संस्कार है। जनेझ सफेद रंग के तीन सूत्र से बना पवित्र धागा होता है जिसे बाँध कंधे से दायें बाजू की ओर पहना जाता है। सनातन धर्म में इसे उपनयन संस्कार के रूप में भी जाना जाता है। यहाँ उपनयन का तात्पर्य ईश्वर के निकट जाना होता है। देव वाणी संस्कृत में इसे यज्ञोपवीत संस्कार कहा जाता है। यह यज्ञ और उपवीत शब्दों के मिश्रण से बना है जिसका मुख्य अर्थ होता है कि यज्ञ-हवन करने का अधिकार प्राप्त होना। बिना जनेझ संस्कार के पूजा पाठ करना, विद्या प्राप्त करना और व्यापार आदि करना सब कुछ निरर्थक माना जाता है।

शास्त्रों में ऐसा वर्णन है कि जनेझ संस्कार की विधि से बालक/बालिका के पिछले जन्मों में किए पाप नष्ट हो जाते हैं। इसलिए यह बालक/बालिका का दूसरा जन्म भी माना जाता है। क्योंकि जनेझ संस्कार होने के बाद ही बालक/बालिका का धर्म में प्रवेश माना जाता है। प्राचीन काल में इसी संस्कार के पश्चात ही बालक/बालिका को शिक्षा दी जाती थी। बालक/बालिका की आयु और बुद्धि बढ़ाने के लिए जनेझ संस्कार अति आवश्यक है।



जनेझ संस्कार कब होना चाहिए?

सामान्य रूप से जनेझ संस्कार किसी बालक/बालिका के किशोरावस्था से युवा अवस्था में प्रवेश करने पर किया जाता है। शास्त्रों की मानें तो ब्राह्मण बालक/बालिका के लिए 07 वर्ष, क्षत्रिय के लिए 11 वर्ष और वैश्य समाज के बालक/बालिका का 13 वर्ष के पूर्व जनेझ संस्कार होना चाहिये और किसी भी परिस्थिति में विवाह योग्य आयु के पूर्व यह संस्कार अवश्य हो जाना चाहिए।

जनेझ संस्कार के लिए शुभ समय

- हिन्दू पंचांग के माघ माह से लेकर अगले छः माह तक यह संस्कार किया जाता है।
- माह की प्रथमा, चतुर्थी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावस्या या फिर पूर्णिमा तिथि जनेझ संस्कार को संपन्न करने के लिए शुभ तिथियाँ होती हैं।
- वहीं यदि हम वार की बात करें तो सप्ताह में बुध, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार इसके लिए अति उत्तम दिन माने जाते हैं। रविवार मध्यम तथा सोमवार बहुत कम योग्य हैं। लेकिन मंगलवार एवं शनिवार के दिन को त्यागा जाता है क्योंकि इसके लिए ये दोनों ही दिन शुभ नहीं होते हैं।



जनेझ संस्कार के लिए शुभ मुहूर्त

नक्षत्रों में हस्त, चित्रा, स्वाति, पुष्य, धनिष्ठा, अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, श्रवण एवं रेवती इस

संस्कार के लिए शुभ नक्षत्र माने जाते हैं।

एक दूसरे नियमानुसार यह भी कहा जाता है कि भरणी, कृतिका, मघा, विशाखा, ज्येष्ठा, शतभिषा नक्षत्र को छोड़कर सभी अन्य नक्षत्रों में जनेऊ संस्कार की विधि संपन्न की जा सकती हैं।



जनेऊ संस्कार का महत्व

हिन्दू धर्म में प्रत्येक पूजा-पद्धति का एक विशेष महत्व हमेशा से ही रहा है। उसके पीछे कोई न कोई कारण अवश्य ही छिपा होता है। फिर चाहे वह विशेष कारण धार्मिक हो, वैज्ञानिक हो या फिर ज्योतिषीय ही क्यों न हो। ठीक इसी प्रकार जनेऊ संस्कार के पीछे भी विशेष कारण छिपा है। इसके पीछे धार्मिक, वैज्ञानिक, ज्योतिषीय के साथ-साथ चिकित्सीय कारण भी जुड़ा हुआ हैं। आइए इन कारणों पर डालते हैं एक नज़र....

धार्मिक महत्व

जनेऊ संस्कार को धार्मिक दृष्टि से देखें तो इसका सीधा संबंध ब्रह्मा, विष्णु और महेश (शंकर जी) से है। इसके तीन सूत्र त्रिदेव का प्रतीक माने गए हैं। मनु स्मृति में ब्रह्मा जी को सृष्टि का रचनाकार कहा गया है, जबकि विष्णु जी को पालनहार और भगवान शिव जी को संहारक कहा गया है। अतः जनेऊ एक पवित्र धागा होता है। इसलिए इसे अपवित्र नहीं करना चाहिए। यदि यह किसी कारणवश दूषित हो जाए तो इसे तुरंत विधि अनुसार बदल लिया जाता है।

वहीं यज्ञोपवीत को गायत्री की प्रतिमा के रूप में भी जाना जाता है। इस प्रतिमा को शरीर या मंदिर में स्थापित या धारण करने पर इसकी पूजा-आराधना का उत्तरदायित्व भी होता है। इसके लिए नित्य रूप से एक माला गायत्री मंत्र को जपना चाहिए। गायत्री मंत्र में तीन पद हैं और यज्ञोपवीत में भी तीन सूत्र हैं। प्रत्येक लड़ में तीन सूत्र हैं। गायत्री के एक-एक पद को लेकर ही उपवीत की रचना हुई है।

शास्त्रों में दाएँ कान में माहात्म्य का वर्णन भी किया गया है। आदित्य, वसु, रुद्र, वायु, अग्नि, धर्म, वैदेश, आप, सोम एवं सूर्य आदि देवताओं का निवास दाएँ कान में होने के कारण उसे दाएँ हाथ से सिर्फ स्पर्श करने पर भी आचमन का फल प्राप्त होता है। जनेऊ में पाँच गाँठ लगाई जाती हैं जो ब्रह्म, धर्म, अर्ध, काम और मोक्ष का प्रतीक हैं। यह पाँच यज्ञों, पाँच ज्ञानेद्रियों और पंच कर्मों का भी प्रतीक भी हैं।

भारत वर्ष में शिक्षा-दीक्षा लेने की संस्कृति वैदिक काल से ही चली आ रही है। इसलिए बालक/बालिका के लिए यह संस्कार किया जाता है।

वैज्ञानिक महत्व

वैज्ञानिक रूप से उपनयन संस्कार का विशेष महत्व बताया गया है। विशेष रूप से यह चिकित्सा की दृष्टि से एक बहुत ही कारगर साबित होता है। इसलिए वैदिक शास्त्रों में इसे

केवल धर्मज्ञा ही नहीं बल्कि एक आरोग्य पोषक की भी संज्ञा दी गई हैं। चिकित्सीय विज्ञान के अनुसार, शरीर के पिछले हिस्से में पीठ पर जाने वाली एक नस है, जो विद्युत के प्रवाह की तरह कार्य करती है। यह रेखा दाँड़ कंधे से लेकर कमर तक स्थित होती है। यह अति सूक्ष्म नस है। अगर यह नस संकृचित अवस्था में हो तो मनुष्य काम-क्रोधादि विकारों की सीमा नहीं लाँघ पाता है और जनेऊ इस नस को संकृचित अवस्था में ही रखता है। इसलिए जनेऊ को धारण करने वाला व्यक्ति शुद्ध चरित्र वाला होता है। उसके अंदर मानवीय गुणों का विकास होता है। यह उसकी आयु, बल और बुद्धि में वृद्धि के लिए सहायक होता है।

एक शोध के अनुसार जो व्यक्ति जनेऊ धारण करता है वह ब्लड प्रेशर और हृदय रोग से मुक्त होता है। दरअस्ल, जनेऊ शरीर में संचार होने वाले रक्त को नियंत्रित बनाए रखता है। चिकित्सकों का ऐसा मानना है कि जनेऊ हृदय के पास से गुजरता है, जिससे हृदय रोग की संभावना कम हो जाती हैं। साथ ही दायें कान के पास से ऐसी नसें गुजरती हैं जिनका संबंध सीधे हमारी आंतों से होता है। जब मल-मूत्र विसर्जन के समय कान में जनेऊ लपेटने से इन नसों में दबाव पड़ता है। ऐसे में पेट अच्छी तरह से साफ़ हो जाता है और पेट से संबंधित रोगों से भी मुक्ति मिलती है।

ज्योतिषीय महत्व

वैदिक ज्योतिष में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु समेत कुल नौ ग्रह होते हैं और इन ग्रहों का प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। जनेऊ में तीन सूत्र में कुल नौ लड़ें होती हैं जो नवग्रह का प्रतीक मानी जाती हैं। ज्योतिष शास्त्र में ऐसा माना जाता है जो व्यक्ति जनेऊ धारण करता है, उस व्यक्ति को नवग्रहों का आशीर्वाद प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त होता है। इसके साथ ही जनेऊ में उपयोग होने वाला श्वेत रंग का धाग शुक्र ग्रह से संबंध को दर्शाता है। शुक्र ग्रह सौन्दर्य, काम, सुख, वैभव, कला, आदि का कारक होता है। इसके साथ ही यज्ञोपवीत को पीले रंग से रंगा जाता है। यह रंग गुरु बृहस्पति से संबंध रखता है। बृहस्पति ग्रह ज्ञान, धर्म, गुरु, अच्छे कर्मों आदि का कारक माना जाता है।



जनेऊ संस्कार की विधि

जनेऊ संस्कार के लिए एक यज्ञ का आयोजन होता है। इस दौरान जिस बालक/बालिका का संस्कार होता है वह सपरिवार यज्ञ में हिस्सा लेता है। जनेऊ पूर्ण विधि के अनुसार बाँड़े कंधे से दाँड़ बाजू की ओर शरीर में धारण किया जाता है। जनेऊ के समय बिना सिला वस्त्र धारण किया जाता है। इस दौरान हाथ में एक दंड लिया जाता है। गले में पीले रंग का एक वस्त्र डाला जाता है। मुँडन के पश्चात एक चोटी रखी जाती है। पैरों में खड़ाऊ होती हैं। इस दौरान मेखला या कोपीन धारण की जाती है। यज्ञ के दौरान सूत्र को विशेष विधि से बनाया जाता है। यज्ञोपवीत को पीले रंग से रंगा जाता है। गुरु दीक्षा के बाद ही इसे हमेशा धारण किया जाता है।

ऐसे किया जाता है जनेऊ संस्कार

जनेऊ संस्कार के दिन बालक/बालिका का मुँडन करवाया जाता है। स्नान के बाद उसके सिर पर चंदन या केसर का लेप लगाया जाता है और उसे जनेऊ पहनाकर ब्रह्मचारी बनाते हैं। फिर हवन का आयोजन होता है और विधिपूर्वक देवताओं का पूजन, यज्ञवेदी एवं बालक/बालिका को अधोवस्थ के साथ माला पहनाकर बैठाया जाता है। इसके पश्चात दस बार गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित करके देवताओं के आह्वान के साथ उससे शास्त्र शिक्षा और व्रतों के पालन का वचन लिया जाता है। इसके बाद उसकी उम्र के बच्चों के साथ बिठाकर चूर्मा खिलाते हैं। फिर स्नान कराकर उस वक्त गुरु, पिता या बड़ा भाई गायत्री मंत्र सुनाकर उस बालक/बालिका से कहता है कि “आज से तू अब ब्राह्मण हुआ”। इसके बाद मृगचर्म ओढ़कर मुंज (मेखला) का कंदोरा बांधते हैं और एक दंड हाथ में दे देते हैं। तत्पश्चात् वह बालक/बालिका उपस्थित लोगों से भीक्षा मांगता है। शाम को खाना खाने के पश्चात् दंड को कंधे पर रखकर घर से भागता है और कहता है कि “मैं पढ़ने के लिए काशी जा रहा हूँ”। बाद में कुछ लोग शादी का लालच देकर पकड़ लाते हैं। इसके बाद ही बालक/बालिका ब्राह्मण मान लिया जाता है।

यज्ञोपवीत संस्कार हेतु मंत्र
यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमयं प्रतिमुंच शुभं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

जनेऊ संस्कार से जुड़ी महत्वपूर्ण बातें

किसी भी मांगलिक कार्य से पहले जनेऊ पहनना अनिवार्य है। विवाह के लिए यह संस्कार ज़रूरी है, क्योंकि इसके बिना विवाह नहीं होता है। मल-मूल विसर्जन के समय जनेऊ को दाहिने कान से लपेटना अनिवार्य होता है। अगर जनेऊ का कोई सूत्र टूट जाए या 6 माह से अधिक समय हो जाए तो यह बदल लेना चाहिए। जन्म-मरण के सूतक के बाद इसे बदल देने की परंपरा है। साफ करने के लिए इसे कण्ठ में घुमाकर धो लें। यदि ये भूल से उत्तर जाए, तो प्रायश्चित्त की एक माला जप करके इसे बदल लेने का नियम है। देव प्रतिमा की मर्यादा बनाये रखने के लिए उसमें चाबी के गुच्छे आदि न बांधें। बालक/बालिका उपरोक्त नियमों के पालन करने योग्य हो जाए, तभी उनका यह संस्कार करें। जनेऊ की लंबाई 96 अंगुल होती है। क्योंकि इसे धारण करने वाले बालक/बालिका को 64 कलाओं और 32 विद्याओं को सीखने का प्रयास करना चाहिए। चार वेद, चार उपवेद, छह अंग, छह दर्शन, तीन सूत्र ग्रंथ, नौ अरण्यक मिलाकर कुल 32 विद्याएं हैं। 64 कलाओं में जैसे- वास्तु निर्माण, व्यंजन कला, चित्रकारी, साहित्य कला, दस्तकारी, भाषा, यंत्र निर्माण, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, दस्तकारी, आभूषण निर्माण, कृषि ज्ञान, आदि सम्मिलित हैं।

आने वाले जनेऊ संस्कार मुहूर्त जानने के लिए यहाँ क्लिक करें - [जनेऊ संस्कार मुहूर्त →](#)



भाग 4: राजयोग

■ गज - केसरी, महा पुरुष, धन योग आदि राज योग

कुंडली में उपस्थित विभिन्न विशिष्ट योग व राजयोग

इस राजयोग रिपोर्ट के अंतर्गत हमने प्रयास किया है कि आपको उन विशिष्ट योगों के बारे में बताएँ जो आपकी जन्म-कुंडली में उपस्थित हैं और आपको जीवन में उन्नति के पथ पर आगे बढ़ने में सहायक सिद्ध होंगे। रहेगा

आपकी जन्म कुंडली में निम्नलिखित विशिष्ट योग एवं राजयोग उपस्थित हैं:

1

गज-केसरी योग

केन्द्रे देवगुरौ लग्नाच्चन्द्रादा शुभदग्युते ।
नीचास्तारिगृहैर्हीने योगोऽयं गजकेसरी
गजकेसरीसञ्जातस्तेजस्वी धनवान् भवेत् ।
मेधावी गुणसम्पन्नो राजप्रियकरो नरः

यदि बृहस्पति चंद्रमा से केंद्र भावों में स्थित है और किसी क्रूर ग्रह से संबंध नहीं रखता है तो गज-केसरी योग बनता है। हालांकि अगर कोई अशुभ ग्रह से संबंध होता है तो इस योग से मिलने वाले फलों में कमी आएगी।

जन्म कुंडली के अनुसार आपका जन्म गज-केसरी योग में हुआ है इसलिए आप दयालु प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे और दूसरों के प्रति स्नेह व विनम्रता का भाव रखेंगे। जीवन में आध्यात्मिक उत्थान को लेकर आपके मन में तीव्र इच्छा होगी। वेद और पुराण में आपकी गहरी रुचि रहेगी और आपका धार्मिक ज्ञान अच्छा होने की वजह से लोग आपसे मार्गदर्शन लेंगे। आपके पास चल और अचल संपत्ति के रूप में बहुत सारा धन होगा। आपके संबंध उच्च वर्ग के लोगों के साथ होंगे। जीवन में आप सभी तरह की भौतिक वस्तुओं का सुख प्राप्त करेंगे। सरकारी सेवाओं में आपको उच्च पद की प्राप्ति भी हो सकती है।

इस योग के प्रभाव से आप दयालु, परोपकारी, लक्ष्मीवान तथा सम्माननीय होंगे।

2

मूसल योग

मानज्ञानधनादैर्युक्ता भूप्रियाः ख्याताः ।
बहुपुत्राः स्थिरचित्ता मुसलसमुत्था भवन्ति नराः

जब अधिकांश ग्रह स्थिर राशियों (वृश्च, सिंह, वृश्चिक एवं कुंभ) में स्थित हों तो मूसल योग का निर्माण होता है।

आपका जन्म इस योग में हुआ है इसलिए आप स्थिर स्वभाव के व्यक्ति होंगे। आपको धन, बुद्धि, सम्मान व संपन्नता प्राप्त होगी और समाज में प्रत्येक व्यक्ति आपके गुणों की प्रशंसा करेगा। इस योग की वजह से आपके करियर स्थिर रहेगी और आय भी अच्छी होगी। आप उन लोगों में से होंगे जिनके पास कम संसाधन होने के बावजूद भी वे अपने क्षेत्र में महारत हासिल करते हैं। हालांकि आप स्वयं के अंदर ज्यादा बदलाव को पसंद नहीं करते हैं। आप एक स्थान और एक ही नौकरी या व्यवसाय करना पसंद नहीं करेंगे। आप जमीन या प्रॉपर्टी जैसी अचल संपत्ति खरीदने के इच्छक होंगे। आप जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेंगे लेकिन यदि एक बार कोई फैसला लिया तो फिर पीछे नहीं हटेंगे।

इस योग के प्रभाव से आप अचल संपत्ति के स्वामी बनेंगे।

3

वोशी योग

**वोशौ च निपुणो दाता
यशोविद्यावलावन्ति:**

यदि चंद्रमा के अतिरिक्त बुध, बृहस्पति या शुक्र (शुभ ग्रह) सूर्य से द्वादश भाव में स्थित हों और सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह नहीं हो, तो वोशी योग बनता है।

जन्म कुंडली के अनुसार आपका जन्म इस योग में होने से आप लोकप्रिय और धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे। आप मृदुभाषी होंगे और अपनी वाणी से लोगों को प्रभावित कर देंगे।

इस योग के प्रभाव से आप लोकप्रिय तथा विख्यात होंगे।

तो इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आपकी कुंडली में उपर्युक्त राजयोग विद्यमान हैं। अतः आप जीवन में समृद्धिशाली एवं विख्यात तथा लक्ष्मीवान बनने की क्षमता रखते हैं। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि इन योगों का निर्माण जिन ग्रहों के द्वारा किया जा रहा है उन ग्रहों को कुंडली में मजबूती देने से इन योगों के प्रभाव में भी वृद्धि होगी तथा जब-जब इन ग्रहों की महादशा, अंतर्देशा तथा अन्य दशाएँ आएंगी तब-तब आपको इन ग्रहों के द्वारा निर्मित उत्तम फलों की प्राप्ति होने की संभावना अत्यधिक बढ़ जाएगी।

आपका स्वर्णिम काल अथवा राजयोगों के फलीभूत होने का समय

अक्सर आपके मन में यह विचार आता होगा कि आपके जीवन का स्वर्णिम काल कब आएगा अथवा आपकी कुंडली के राजयोग कब फल देंगे? अपनी इस राज योग रिपोर्ट के अंतर्गत हम आपको बताना चाहते हैं कि आपकी जन्म कुंडली में उपस्थित विभिन्न राज योगों का प्रभाव यूँ तो

जीवन पर्यन्त आपके ऊपर रहता है परन्तु विशेष रूप से जीवन का स्वर्णिम काल कुंडली में उपस्थित विशिष्ट राज योगों को बनाने वाले विभिन्न ग्रहों की महादशा, अंतर्दशा इत्यादि में आता है। क्योंकि इसी दौरान ये ग्रह पूर्ण रूप से आपकी कुंडली में प्रभावी होकर आप पर अपना प्रभाव डालते हैं और इन्हीं के प्रभाव से आप जीवन में ऊँचाइयों तक पहुंचते हैं, जिससे आप तरक्की के साथ-साथ यश, मान-सम्मान तथा उपलब्धियाँ प्राप्त करते हैं।

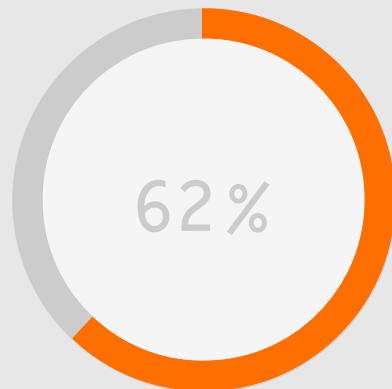
स्वर्णिम काल:
सितंबर 2057 से अप्रैल
2060

नोट इस समय में ग्रहों और नक्षत्रों की चाल से राजयोग का प्रभाव सबसे अधिक रहेगा।

आपकी कुंडली में राजयोग की शक्ति

जैसा कि आप जानते ही हैं, राजयोग आपको धनवान, अधिक सफल और अधिक संपन्न बनाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो राजयोग के माध्यम से जीवन में इन सभी वस्तुओं को प्राप्त करने की जन्म-कुंडली की क्षमता का पता चलता है। विभिन्न लोगों की कुंडलियों की क्षमता भिन्न-भिन्न होती है कुछ व्यक्तियों की कुंडलियों में अंतर्निहित यह क्षमता अन्य की अपेक्षा अधिक होती है। अतः अपनी कुंडली में स्थिति राजयोगों की शक्ति के आधार पर आप स्वयं के भीतर छुपी संभावनाओं को पल्लवित करने के लिए उसी स्तर पर प्रयत्न करने की तैयारी कर सकते हैं। आइए, देखें कि इस दृष्टिकोण से आपकी कुंडली का अंतिम विश्लेषण क्या कहता है।

राजयोग की शक्ति: 62%



हम आशा करते हैं कि यह राजयोग रिपोर्ट आपके लिए सहायक सिद्ध होगी और आप जीवन में नित नई ऊँचाइयों को छोड़ते रहेंगे। परमात्मा की अनुकम्पा आप पर सदैव बनी रहे!



भाग 5: फलादेश

-
- करियर, स्वास्थ्य एवं विस्तृत भविष्यफल

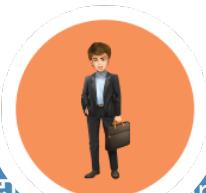
करियर

जन्मकुंडली की मदद से बच्चे का करियर चयन न केवल उसे सफल बनाता है बल्कि जीवन में संतुष्टि भी देता है। इस बात को समझते हुए एस्ट्रोसेज ने कॉग्निएस्ट्रो के रूप में एक पद्धति तैयार की, जो व्यक्ति उनके व्यक्तित्व के अनुसार सर्वश्रेष्ठ करियर विकल्प का सुझाव देती है। कॉग्निएस्ट्रो में कुल 6 प्रकार के व्यक्तित्व प्रकार बताए गए हैं। ये हैं- यथार्थवादी, खोजी, कलात्मक, सामाजिक, उद्यमी और पारंपरिक। इस जन्मकुंडली के विक्षेपण के अनुसार, बच्चे के व्यक्तित्व प्रकार यथार्थवादी (Realistic) और उद्यमी (Enterprising) हैं। यहाँ बच्चे के व्यक्तित्व का विस्तृत विवरण दिया गया है-



यथार्थवादी (Realistic)

यह बच्चा काफी सक्रिय और प्रतिस्पर्धी होगा, जिसका अर्थ है कि वे एक 'कर्ता' व यथार्थवादी होंगे। ऐसे बच्चों को अपने ऊर्जावान स्वभाव के कारण अक्सर खेल के मैदान में देखा जा सकता है। अगर उन्हें कोई समस्या होती भी है तो वे खुद ही उसका हल निकालना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, वो अपने खिलौनों को खोल कर, यह समझने की कोशिश करते हैं कि वो काम कैसे करते हैं और दूट क्यों गए। वे स्वयं अपने हाथों का इस्तेमाल और उनकी सहायता के लिए औजारों का उपयोग करके चीज़े बेहतर तरीके से सीख पाते हैं। इस बच्चे को एक ऐसे करियर का चयन करना चाहिए, जिसमें उपर्युक्त "यथार्थवादी" कौशल की आवश्यकता हो।



उद्यमी (Enterprising)

यह बच्चा अक्सर उनके प्लेग्रुप का लीडर होगा। इसे नए कारनामों और साहसिक कार्यों को करने में आनंद आएगा। जिसका अर्थ है कि ये 'प्रभावशाली' या उद्यमी हैं। इसका मतलब है कि यह एक अच्छा लीडर होगा, जो दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता रखेगा। यह बहुत ऊर्जावान और मिलनसार हो सकता है। ऐसे बच्चे के विकास में सहायता के लिए माता-पिता किसी कार्य में बच्चे से ही मदद मांग सकते हैं, जैसे कि उनसे जूस बिखर गया है तो कैसे साफ करें या उनके लंबबॉक्स में अगर खाना बासी हो रहा है तो क्या करें। इस तरह बच्चे की भाविक जिज्ञासा को आगे बढ़ने दें और उन्हें स्वयं ही निर्णय लेने दें। इस बच्चे को एक ऐसे करियर का चयन करना चाहिए, जिसके लिए उपरोक्त "उद्यमी" कौशल की आवश्यकता होती है।

आपकी लग्न रिपोर्ट

आपका लग्न है:

वृषभ



वैदिक ज्योतिष में लग्न का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। बालक के जन्म के समय में जो राशि पूर्वीय क्षितिज पर उदित होती है। वह राशि लग्न राशि कहलाती है। तथा यह राशि जिस भाव में पड़ती है। वह भाव लग्न भाव कहलाता है। लग्न ज्योतिष से एक व्यक्ति के जीवन की सूक्ष्मतम घटनाओं का अध्ययन करने में सहायता मिलती है। जबकि दैनिक, साताहिक, मासिक और वार्षिक भविष्याणियां चन्द्र राशि और सूर्य राशि पर आधारित होती हैं।



वृषभ लग्न के लिए स्वास्थ्य

वृषभ लग्न आपको एक मजबूत और उत्तम स्वास्थ्य प्रदान कर रहा है। लेकिन कुछ शारीरिक समस्याओं का सामना आपको जीवन भर करना पड़ सकता है। विशेष रूप से आप तंत्रिका तंत्र से संबंधित बीमारियों से ग्रसित हो सकते हैं। यदि आपका जन्म मई मास में हुआ है तो आपको अधिक वजन की भी समस्या हो सकती है। कभी कभी यौन रोग आपको अपने प्रभाव में ले सकते हैं। इसके अलावा जीवन में ग्रीवा कशरुक, निचले जबड़े, दांत, ठोड़ी और तानु की समस्याएं होने की संभावनाएं भी बनती हैं। गुर्दे, गुसांग, मूत्राशय, गर्दन और गले में होने वाले रोगों से आपको सतर्क रहना चाहिए।



वृषभ लग्न के लिए स्वभाव व व्यक्तित्व

वृषभ लग्न के अंतर्गत जन्म लेने के कारण आप कुछ अव्यवहारिक हो सकते हैं। जिसके कारण नए लोगों को आप न भायें। अपने शांत और अंतर्मुखी व्यवहार, के कारण नए लोगों से मिलना जुलना पसंद नहीं करते हैं। अगर आपके साथ ठीक से व्यवहार नहीं किया जाता और समझा भी नहीं जाता, तो आपमें दूसरों के प्रति आक्रोश और रुद्धिवादिता की भावना उत्पन्न हो सकती हैं। आपको अक्सर नए दोस्त बनाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता हैं जिसके कारण आप नए लोगों से मिलने में संकोच करते हैं। आप विश्वसनीय और व्यवहारिक प्रकृति के हो सकते हैं। आपका यह स्वभाव आपको कारोबार में आपको अच्छी सफलता दिला सकता है। आपके व्यक्तित्व में कामुकता का भाव भी हो सकता है। इसके कारण आप सभी क्षेत्रों में भौतिक सुख प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहते हैं और आप काफी उद्यमी प्रकृति के भी हो सकते हैं। आप अपने कार्यों को अपने अनुसार निश्चित समय में पूरा करते हैं। व दूसरे लोगों द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना भी करते हैं तथा उनकी प्रतिभा की भी खुलकर तारीफ करते हैं। उस समय आपका व्यवहार किसी बॉस के समान भी हो सकता है। आपकी राशि के व्यक्तियों को आसानी से आकर्षित नहीं किया जा सकता और अगर ऐसा किया भी जाता है तो काफी सावधानी बरतनी पड़ती है। आप लोग अपने मूल्य और सिद्धांतों के प्रति काफी अंडिग रहते हैं, और आपके दृष्टिकोण को बदलना आसान नहीं होता है। आपकी स्नेही प्रकृति और सच्चाई की सराहना करने का गुण, दूसरों को आपकी और आकर्षित करता है। इसी के कारण आप एक चुम्बकीय व्यक्तित्व के स्वामी हैं। आप स्वभाव से आवेगी नहीं होंगे लेकिन लेकिन अगर आप के साथ जबदस्ती का व्यवहार किया जाए तो आप उग्र हो सकते हैं। कई बार आप पूर्वाग्रही और जिद्दी भी हो सकते हैं। आप काफी सावधानी से अपने दोस्तों का चयन करते हैं। तथा आप झूठ बोलना पसंद नहीं करते हैं हालांकि आपको आसानी से मनाया जा सकता है।



वृषभ लग्न के लिए शारीरिक रूप-रंग

वृषभ लग्न के लोगों में कम ऊंचाई वाले और कभी कभी दुबले कद काठी के होते हैं। आमतौर पर आप लोग सुंदर कद काठी, ऊँची नाक, चमकदार आँख और कामुक होठ वाले होते हैं। आपका जितना चेहरा सुंदर देखने में होता है उतना आप भाग्यशाली नहीं होते हैं। आपकी शारीरिक संरचना चौकोर आकार ही होती है। आप लोगों के पीठ पर कुछ निशान भी होते हैं। वृषभ लग्न के लोग मेलजोल वाले होते हैं।

आपकी नक्षत्र रिपोर्ट

आपका नक्षत्र

कृतिका

आपका नक्षत्र चरण

4

नक्षत्र क्या है?

हिन्दू ज्योतिष में नक्षत्रों का विशेष महत्व है। आकाश को यदि 27 (कभी-कभी 28) बराबर भागों में विभाजित किया जाए, तो प्रत्येक भाग एक नक्षत्र कहलाता है। हर नक्षत्र को बराबर-बराबर चार पदों में भी विभाजित किया गया है। ज्योतिष की अवधारणा के अनुसार हर पद एक अक्षर को इंगित करता है। प्रायः किसी व्यक्ति के जन्म के समय चन्द्रमा जिस पद में होता है, उससे जुड़े अक्षर से उस व्यक्ति का नाम रखा जाता है।

कृतिका नक्षत्र फल

आप अच्छे सलाहकार और आशावादी सोच वाले हैं। शिष्ट आचरण और मर्यादित जीवन जीना आपकी विशेषता है। आपके चेहरे से एक तेज झलकता है और आप चलते भी तेज गति से हैं। कृतिका शब्द से अंग्रेजी भाषा का 'क्रिटिकल' शब्द बना है अतः मानवीय स्वभाव के दोषों को खोज निकालना और उन्हें दूर करने का प्रयास करना आपका विशेष गुण हैं। आप किसी भी कार्य के परिणाम का विक्लेषण करके उसमें छुपे गुण-दोष भी खोज निकालने में माहिर हैं। आप अपने वचनों के पक्के हैं और समाज-सेवा में भी रुचि रखते हैं। यश और ख्याति से तो आपको कुछ लेना-देना ही नहीं है तथा किसी की दया पर भी आश्रित नहीं रहना चाहते हैं। अपना हर काम आप खुद करने में विश्वास रखते हैं। हालात के अनुसार ढलना भी आपको नहीं आता और अपने फैसलों पर हमेशा अंडिग रहते हैं। भले ही बाहर से आप कठोर नज़र आते हों परंतु आपके अंदर प्यार, ममता व दया छिपी हुई है। आपका क्रोध डाराने के लिए नहीं बल्कि नीति-नियमों का पालन करने के लिए होता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में भी आपकी रुचि है। आप जप-तप, व्रत-उपवास करके धार्मिक जीवन में उन्नति कर सकते हैं। एक बार अगर आप आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ जाते हैं तो किसी प्रकार के माया-मोह के बंधन आपका रास्ता नहीं रोक सकते। अत्यधिक परिश्रमी होने से आप निरंतर कर्म करने में विश्वास रखते हैं। शिक्षा का क्षेत्र हो अथवा नौकरी, व्यवसाय का - आप सबसे आगे रहना पसंद करते हैं। पिछड़ना या पराजित होना तो आपको असह्य जान पड़ता है। आपका अत्यधिक ईमानदारी भरा व्यवहार आपको धोखा भी दिलवा सकता है। प्रायः जन्मभूमि से दूर रहकर ही आप ज्यादा सफलता प्राप्त करेंगे। आप दूसरों को उनकी समस्याओं से निपटने के लिए अच्छी सलाह देने में सक्षम हैं। आपको ग़लत तरीकों से और दूसरों की दया से यश, धन और नाम कमाना बिलकुल

पसंद नहीं है। आपमें धन कमाने की भी अपूर्व योग्यता है और किसी भी लक्ष्य के लिए कड़ा परिश्रम करना आपकी आदत में शुमार है। आपका सार्वजनिक जीवन भी यशस्वी होगा। आपका रूप आकर्षक होगा और साफ-सफाई पसंद करने वाले होंगे। आप जीवन को अपने नियमों और उस्तूरों से जियेंगे। आपकी संगीत और कला के प्रति भी बहुत रुचि होगी तथा आप सिखाने का काम भी बखूबी कर सकते हैं।

शिक्षा और आय : आप प्रायः अपने जन्म-स्थान पर नहीं टिकेंगे और रोज़गार के सिलसिले में परदेश जा सकते हैं। चिकित्सा, इंजीनियरिंग, दवाइयों से जुड़े क्षेत्र, आभूषण-निर्माण सम्बंधित कार्य, विश्वविद्यालय के उच्च अधिकारी या विभागाध्यक्ष, वकील, न्यायाधीश, सेना, पुलिस या सुरक्षा बल में नौकरी, अग्निशमन अधिकारी, पालना-घर, अनाथ आश्रम से जुड़े कार्य, व्यक्तित्व निखारने व आत्मविश्वास बढ़ाने से सम्बंधित कार्य, आध्यात्मिक गुरु या उपदेशक, अग्नि से जुड़े व्यवसाय जैसे हलवाई, बेकरी, वैलिंग, ढलाई का काम, सिलाई-कढ़ाई, दर्जी, चीनी मिट्टी या सिरेमिक की वस्तुएँ बनाने वाले तथा वे सभी कार्य जिसमें आग या तेज धार वाले औज़ारों का प्रयोग होता हो – आप उन्हें करके सफल हो सकते हैं।

पारिवारिक जीवन : आपका वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा। जीवनसाथी गुणवान, समर्पित, निष्ठावान और घरेलू कार्य में निपुण होगा। इतने अनुकूल घरेलू वातावरण के बावजूद जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपकी चिंता का विषय हो सकता है। आपका जीवनसाथी पूर्व परिचित हो सकता है। प्रेम विवाह की भी संभावना है। आप अपनी माता से विशेष लगाव रखते हैं और आपको अपनी माता से अन्य भाई व बहनों की अपेक्षा अधिक स्नेह मिलेगा। संभव है कि जीवन 50 वर्ष की आयु तक विशेष संघर्षशील रहे, लेकिन उसके उपरांत 50 वर्ष से 56 वर्ष की उम्र का समय बहुत अच्छा बीतेगा।

विस्तृत भविष्यफल



चरित्र

आप एक संवेदनशील एवं भावुक व्यक्ति हैं। जीवन की कठनाइयों का आप पर अन्य लोगों की तुलना में ज्यादा प्रभाव पड़ता है परिणामस्वरूप आप जीवन के कुछ सुखद पल खो देते हैं। दूसरों द्वारा कहीं गर्यां बातों को आप दिल पर ले लेते हैं। अतः कुछ ऐसी बातें हैं जो आपको दुःख देती हैं परन्तु उस पर ध्यान नहीं दिया जाना चाहिये। आपके कार्य करने का तरीका शान्तिपूर्ण है, परिणामस्वरूप आप अपने सहकर्मियों की नजर में मजबूत इच्छाशक्ति एवं दृढ़-निश्चयी वाले व्यक्ति प्रतीत होते हैं। आपकी यह प्रवृत्ति आपको अपना लक्ष्य प्राप्त करने में मदद करती है। आप बोलने से अधिक सोचते हैं और आपका यह चिन्तनतार्किक होता है। लोग आपसे सलाह मांगने इसलिये आते हैं क्योंकि आपका निर्णयपालन करने योग्य और निष्पक्ष होता है। आपमें अनेक उत्तम गुण हैं। आप एक सहानुभूतिपूर्ण मनुष्य हैं, जोकि आपको एक अच्छा मित्र बनाता है। आप अनुरागी व देशभक्त हैं, यहीं कारण है कि आप एक अच्छे नागरिक भी हैं। आप प्यारे मातापिता होंगे। आप अपने मातापिता की इच्छानुसार कार्य करेंगे। निश्चय ही आपकी ये अच्छाइयां दूसरों पर भारी पड़ेंगी।



सौभाग्य व संतुष्टि

आप दूसरों के साथ का पूरा आनन्द लेते हैं। आप हंसमुख और खुशमिजाज हैं एवं हंसने में संकोच नहीं करते तथा प्रायः अच्छा 'सेंस आंफ ह्यूमर' रखते हैं। आपका मन सौन्दर्य से अत्यन्त प्रभावित रहता है और आप इसे प्रमुखता से अपन आस-पास के वातावरण में दिखाते हैं। जो व्यक्ति अपने चारों ओर सुन्दरता ला सकता है, वह सदैव आनन्दोन्मुखी होता है।



जीवन शैली

आप अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक अन्तर्मुखी हैं। यदि आपको बहुत से लोगों के समूह के सम्मुख जाना पड़े, तो आप 'स्टेज फोबिया' से ग्रसित हो जाते हैं। आप सबसे अधिक प्रेरित एकान्त में, इच्छानुसार कार्य अपनी गति से करने में होते हैं।



रोजगार

आपको ऐसा कार्यक्षेत्र चुनना चाहिए जिसमें आप समूह में काम करते हों और जहाँ कार्य सम्पन्न करने की समय-सीमा अनिश्चित हो। आपको कोई ऐसा कार्यक्षेत्र चुनना चाहिए, जहाँ सहभागिता से

काम होता हो, उदाहरणार्थ समूह का नेतृत्व करना आदि।



व्यवसाय

आपकी ऊर्जा एवं शक्ति आपके व्यक्तित्व का एक विशेष गुण है। जब अन्य लोग सोच रहे होते हैं तब आप कर रहे होते हैं और 'जो पहले आवे सो पावे'। आपको ऐसे सभी कार्यक्षेत्रों को भूल जान चाहिये जहां सूट-बूट एवं दिखावे का बोलबाला हो। आप ऐसी वाद्य गुणों से परे कहीं अधिक व्यावहारिक हैं। यहां तक कि वे आपको व्यग्र कर देती हैं। आप जमीन से जुड़े एक कार्यशील व्यक्ति हैं जो सबकुछ करने के लिये सदैव तत्पर रहता है। आप सच्चे जीवन और फिल्मी पर्दे दोनों में एक अन्वेषक की भूमिका बखूबी कर सकते हैं। आप एक 'सर्जन' की तरह बेहतर कार्य कर सकते हैं बजाय कि एक वित्तीय सलाहकार के। ऐसा कोई भी कार्य जहां कुछ बनाने की कला कि आवश्यकता होती है आप वहां सफल हो सकते हैं। इंजीनियरिंग इस प्रकार का एक कार्यक्षेत्र कहा जा सकता है। समुद्र सम्बन्धी ऐसे कई कार्य हैं जो आपके लिये पूर्णतः उपयुक्त हैं। आपके अन्दर एक वायुयान-चालक सरीखा साहस है। जमीन से जुड़ी हुई आपकी ऊर्जा के अनुरूप भी कई कार्यक्षेत्र हैं। आप सिर्फ एक बेहतरीन किसान ही नहीं हो सकते बल्कि आप एक बेहतर सर्वेक्षक, खदान इंजीनियर या खदान-अन्वेषक भी हो सकते हैं।



स्वास्थ्य

यह कहना ठीक नहीं होगा कि आप हृष्ट-पुष्ट हैं। लेकिन इसका कोई कारण नहीं है कि आप दीर्घायु नहीं हो सकते ये बस थोड़ी सावधानी बरतने की आवश्यकता है। दो रोग ध्यान देने योग्य हैं - अपच व गठिया। अपच से बचने के लिसे भोजन लेते वक्त जल्दबाजी न करें तथा शान्ति पूर्वक भोजन लें। साथ ही भोजन को सही समय पर लें। गठिया से बचने के लिये ध्यान रखें कि आप अपने जोड़ों को आर्द्र वायु, ठण्डी हवाओं और गीलेपन आदि से दूर रखें।



रुचि

आपकी अभिरुचियां शारीरिक से अधिक बौद्धिक होंगी। आप उनमें पर्याप्त सफल होंगे। आप एक बहुत अच्छे शतरंज के खिलाड़ी बन सकते हैं। यदि ताश आपको आकर्षित करते हैं, तो आप 'ब्रिज' में बहुत अच्छे होंगे।



प्रेम आदि

आप जीवन को सिर्फ अपने वृष्टिकोण से देखते हैं, आपकी आयु जैसे-जैसे बढ़ेगी, आपको अपने सुख और दुःख बांटने के लिये एक जीवनसाथी की आवश्यकता महसूस होगी। आप 'अपने-घर' के

सिद्धान्त को मानते हैं और विवाह को इसके क्रियान्वयन का मुख्य साधन मानते हैं। आपका घर आपके लिये ईश्वर-स्वरूप होगा। आप सदैव अपने बच्चों की चाहत रखेंगे, क्योंकि उनके बगैर आप कभी भी पूर्णरूप से खुश नहीं रह पाएंगे। निश्चित तौर पर आप प्रेम के लिये विवाह करेंगे पर जैसे-जैसे समय बीतता जाएगा, आप अपने जीवनसाथी के बारे में ज्यादा से ज्यादा सोचना आरम्भ कर देंगे। और अन्त में ऐसा समय आएगा, जहां आपके लिये अपने जीवनसाथी से एक या दो दिन के लिये भी अलग रहना सम्भव नहीं होगा।



वित

वित संबन्धी मामलों में, आपको किसी बात की चिन्ता की आवश्यकता नहीं है। आपके मार्ग में कई सुअवसर आएंगे। आप शून्य से भी काफी कुछ बना सकते हैं, बड़ी एवं उतार-चढ़ाव वाली योजनायें, आपका एकमात्र जोखिम हैं। वित के सम्बन्ध में आप अपने मित्रों के लिये, यहाँ तक कि स्वयं के लिये एक पहेली होंगे। आप अपने धन का असामान्य तरीकों में निवेश करेंगे। सामान्य तौर पर, आप पैसा बनाने में सफल रहेंगे मुख्यतः जमीन, घर, अचल सम्पत्ति से जुड़े हुए क्षेत्रों में।



शिक्षा

आप एक अच्छी संवाद शैली के लिए जाने जाएंगे और आपके कम्युनिकेशन स्किल इतने बेहतर होंगे कि वह आपको भीड़ में सबसे आगे लेकर जाएंगे। आपकी बुद्धि तीव्र होगी और स्मरण शक्ति भी गजब की होगी इसी वजह से आप किसी भी बात को आसानी से और लंबे समय तक याद रख पाएंगे। आपके जीवन की यही सबसे बड़ी विशेषता होगी और उसी के बल पर आप अपनी शिक्षा को अच्छे से पूरा कर पाएंगे और उसमें सफलता अर्जित कर पाएंगे। आपके मन में शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने की भी इच्छा विशेष रूप से जागेगी। गणित, सांख्यिकी, तार्किक क्षमता आदि के मामले में आप काफी मजबूत साबित होंगे और इन के दम पर अपनी शिक्षा में सफलता के झंडे गाड़ देंगे। आपको बीच-बीच में अपनी एकाग्रता को प्राप्त करने के लिए प्रयास करना होगा क्योंकि अन्यथिक सोच विचार करना आपको पसंद है, लेकिन यही आपकी सबसे बड़ी कमजोरी भी है। इससे बचने का प्रयास करेंगे तो जीवन में और शिक्षा के क्षेत्र में उच्चतम शिखर पर पहुंच सकते हैं।



A-139, Sector 63, Noida (UP) 201307, India

वेबसाइट: <https://www.AstroSage.com>

Disclaimer

We want to make it clear that we put our best efforts in providing this report but any prediction that you receive from us is not to be considered as a substitute for advice, program, or treatment, that you would normally receive from a licensed professional such as a lawyer, doctor, psychiatrist, or financial adviser. Although we try our best to give you accurate calculations, we do not rule out the possibility of errors. The report is provided as-is and we provide no guarantees, implied warranties, or assurances of any kind, and will not be responsible for any interpretation made or use by the recipient of the information and data mentioned above. If you are not comfortable with this information, please do not use it. In case of any disputes, the court of law shall be the only courts of Agra, UP (India).

Icons source - freepik.com